सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

रामायण रिसर्च काउंसिल

#संकल्प-सीतामढ़ी

- सीतामढ़ी के सबसे प्राचीन (834 वर्ष प्राचीन मठ) श्रीराम जानकीमठ का जीर्णोद्धार करेंगे ।
- सीतामढ़ी को शक्ति क्षेत्र के रूप में विकसित करेंगे । इस हेतु 51 शक्तिपीठों से मिट्टी व ज्योत लाकर एक 'अखंड ज्योत' व सभी विद्याओं की मूल 'श्रीचतुर्भुजा महालक्ष्मीजी' को स्थापित करेंगे।
- सीतामढ़ी में संबंधित स्थल पर 'विश्व-नारी-शक्ति-केंद्र' की स्थापना करेंगे।
- "जानकी कथा" के माध्यम से मां जानकी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्श के वैश्विक प्रसार को और गति देंगे।

रामायण रिसर्च काउंसिल

सीतामढ़ी में अति प्राचीन 'श्रीराम-जानकी स्थान' (राघोपुर बखरी स्थित) के जीर्णोद्धार तथा एक शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने हेतु-संकल्प एवं कार्य-योजना

- माँ सीताजी के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में माँ सीताजी का भव्य मंदिर बने, इसके लिए 'रामायण रिसर्च काउंसिल' वर्ष 2020 से ही प्रयासरत रही। इस दौरान काउंसिल ने सीतामढ़ी, पटना, दिल्ली समेत देश के कई नगरों में कई प्रेस वार्ता की, संगोष्ठी आयोजित की, जानकी नवमी पर जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किए, जनजागरूकता अभियान चलाए, माँ सीताजी से संबंधित साहित्य बँटवाये जैसे कई कार्य किए।
- हम बिहार सरकार अंतर्गत बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद् के आभारी हैं कि उन्होंने 'रामायण रिसर्च काउंसिल' को राघोपुर बखरी स्थित 834 वर्ष प्राचीन श्रीरामजानकी स्थान पर लगभग 12 एकड़ भूमि आवंटित की। यह मठ सीतामढ़ी का सबसे प्राचीन मठ है, जो आज अति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है।
- दिनांक 25.04.2026 को श्रीजानकी नवमी को पावन अवसर पर बिहार सरकार के मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी के हाथों इस प्राचीन श्रीरामजानकी स्थान के जीर्णोद्धार हेतु शिलापूजन किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार में राज्य मंत्री श्री एस.पी. सिंह बघेल जी, सांसद श्री अजय भट्ट जी, सांसद श्री चिन्तामणि महाराज जी समेत कई प्रतिष्ठित जगतगुरु, महामंडलेश्वर एवं संत-समाज के लोकप्रिय महानुभाव उपस्थित रहे।
- काउंसिल अब यहाँ तीन चरणों में कार्य कर रही है।
- पहले चरण में हम इस श्रीरामजानकी मठ का जीर्णोद्धार करेंगे जिसका शिलापूजन बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी के हाथों 25 अप्रैल 2026 को सम्पन्न हुआ। दूसरे चरण में सीतामढ़ी में इस स्थान पर प्रति दिन होने वाली "भूमि-आरती" की प्रारंभ करेंगे तथा तीसरे चरण में मठ के सामने की भूमि पर 51 शक्तिपीठों से मिट्टी एवं ज्योत लाकर विनायक तथा अखंडित रहने वाली एक "अखंड शक्तिपुंज" की स्थापना करेंगे। श्रीदुर्गा सप्तशती के प्राधानिक रहस्य में जिस "चतुर्भुजा महालक्ष्मीजी" का उल्लेख है, जिससे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, शंकर भगवान विष्णु भगवान, गौरी माँ इत्यादि देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है, उन "चतुर्भुजा महालक्ष्मीजी" गर्भ गृह में स्थापित करेंगे।
- सीतामढ़ी में काउंसिल का "विश्व नारी शक्ति केंद्र" की भी स्थापना करना, प्रमुख उद्देश्यों में से एक है।
- गर्भगृह के चारों ओर वृताकार रुप से श्रीभगवती सीताजी की 108 ऐसी प्रतिमाएं होंगी जो उनके जीवन-दर्शन को (प्रारंभिक से क्रमवार) बिना किसी शब्द के ही वर्णित कर देगा। जगतजननी मां जानकी जी के जीवन-दर्शन को प्रदर्शित करते 108 प्रतिमाओं का दर्शन नौका विहार रूप से विकसित किया जाएगा। नौका विहार हेतु - नौका दोनों दिशा- आगमन तथा प्रस्थान कर सके, ऐसी रूपरेखा विकसित होगी।

- यहां श्रीहनुमानजी की 108 फीट ऊंची प्रतिमा, श्रीजटायु की 21 फीट ऊंची प्रतिमा तथा मां सीताजी के स्वयंवर में प्रयुक्त धनुष के एक प्रतीक की 21 फीट ऊंची प्रतिमा भी स्थापित होगी।
- 'मंदिर की बनावट: संरचना श्रीविद्या के अनुरूप विकसित किया जाना है।
- वहीं, अध्ययन केंद्र, शोध केंद्र, वेदपाठशाला, आयुर्वेद प्रशिक्षण केंद्र सहित महिलाओं को रोज़गारपरक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करना हमारी प्राथमिकताओं में है।
- इस पवित्र परिसर में सभी देवी-देवता अपने अद्भुत रूप में स्थापित होंगे। जैसे बालाजी, बांके बिहारी जी, खाटू श्यामजी आदि कई देवतागण उसी स्वरुप में स्थापित होंगी, जो वे अपने स्वरुप में संबंधित स्थल पर स्थापित हैं। वहीं श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मिकीजी, श्रीकेवटजी समेत कई महापुरुषों की पूज्यनीय प्रतिमाएं भी स्थापित की जाएंगी।
- इसके साथ ही हम श्रीजानकी कथा के माध्यम से मां सीताजी के प्रेरणादायी जीवन आदर्शों एवं महिमा का प्रसार साथ-साथ करते रहेंगे

... इसलिए 'चतुर्भुजा महालक्ष्मी' को स्थापित करना है आवश्यक

चतुंर्भुजा महालक्ष्मी जी का उल्लेख दुर्गासप्तशती के प्राधानिक रहस्य में आया है। मार्कण्डेय ऋषि लिखते हैं कि राजा कहते हैं- भगवन्! आपने चण्डिका के अवतारों की कथा मुझसे कही। ब्रह्मन्! अब इन अवतारों की प्रधान प्रकृति का निरुपण कीजिये और देवी के जिस स्वरूप की और जिस विधि से आराधना करनी है, वह सब यथार्थ रूप से बतलाइये।

इस पर ऋषि कहते हैं- राजन्! यह रहस्य परम गोपनीय है। इसे किसी से कहने - योग्य नहीं बतलाया गया है; किंतु तुम मेरे भक्त हो, इसलिये तुमसे न कहने योग्य मेरे पास कुछ भी नहीं है।

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता॥4॥

अर्थ : त्रिगुणमयी परमेश्वरी महालक्ष्मी ही सबका आदि कारण हैं। वे ही दृश्य और अदृश्य रूप से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं॥4॥

मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि॥5॥

अर्थ : राजन्! वे अपनी चार भुजाओं में मातुलुंग (बिजौरे का फल), गदा, खेट (ढ़ाल) एवं पानपात्र और मस्तक पर नाग, लिंग तथा योनि - इन वस्तुओं को धारण करती हैं॥5॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा॥6॥

अर्थ : तपाये हुए सुवर्ण के समान उनकी कान्ति है, तपाये हुए सुवर्ण के ही उनके भूषण हैं। उन्होंने अपने तेज से इस शून्य जगत् को परिपूर्ण किया है॥6॥

शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि॥7॥

अर्थ : परमेश्वरी महालक्ष्मी ने इस सम्पूर्ण जगत् को शून्य देखकर केवल तमोगुणरूपा उपाधि के द्वारा एक अन्य उत्कृष्ट रूप धारण किया॥7॥

सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा॥8॥

अर्थ : वह रूप एक नारी के रूपमें प्रकट हुआ, जिसके शरीर की कान्ति निखरे हुए काजल की भाँति काले रंग की थी, उसका श्रेष्ठ मुख दाढ़ों से सुशोभित था। नेत्र बड़े - बड़े और कमर पतली थी॥8॥

खड्गपात्रशिर:खेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिर:स्रजम्॥9॥

अर्थ : उसकी चार भुजाएँ ढ़ाल, तलवार, प्याले और कटे हुए मस्तक से सुशोभित थीं। वह वक्ष:स्थल पर कबन्ध (धड़) – की तथा मस्तक पर मुण्डों की माला धारण किये हुए थी॥9॥

सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः॥10॥

अर्थ : इस प्रकार प्रकट हुई स्त्रियों मे श्रेष्ठ तामसी देवीने महालक्ष्मी से कहा - ' माताजी ! आपको नमस्कार है । मुझे मेरा नाम और कर्म बताइये' ॥10॥

तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥11॥

अर्थ : तब महालक्ष्मीने स्त्रियों में श्रेष्ठ उस तामसी देवी से कहा-'मैं तुम्हें नाम प्रदान करती हूं और तुम्हारे जो - जो कर्म हैं, उनको भी बतलाती हूं, ॥11॥

महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया॥12॥

अर्थ : महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा,तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि तथा दुरत्यया - ॥12॥

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्॥13॥

अर्थ : ये तुम्हारे नाम हैं, जो कर्मों के द्वारा लोक में चरितार्थ होंगे । इन नामों के द्वारा तुम्हारे कर्मों को जानकर जो उनका पाठ करता है, वह सुख भोगता है ' ॥13॥

तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ॥14॥

अर्थ : राजन् ! महाकाली से यों कहकर महालक्ष्मी ने अत्यन्त शुद्ध सत्त्व गुण के द्वारा रूप धारण किया, जो चन्द्रमा के समान गौरवर्ण था ॥14॥

अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ॥15॥

अर्थ : वह श्रेष्ठ नारी अपने हाथों में अक्षमाला, अंकुश, वीणातथा पुस्तक धारण किये हुए थी । महालक्ष्मी ने उसे भी नाम प्रदान किये ॥15॥

महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी॥16॥

अर्थ : महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा और धीश्वरी (बुद्धिकी स्वामिनी) – ये तुम्हारे नाम होंगे ॥16॥

अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥17॥

अर्थ : तदनन्तर महालक्ष्मी ने महाकाली और महासरस्वती से कहा-' देवियो ! तुम दोनों अपने - अपने गुणों के योग्य स्त्री - पुरुष के जोड़े उत्पन्न करो' ॥17॥

इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ॥18॥

अर्थ : उन दोनों से यों कह कर महालक्ष्मी ने पहले स्वयं ही स्त्री - पुरुष का एक जोड़ा उत्पन्न किया। वे दोनों हिरण्यगर्भ (निर्मल ज्ञानसे सम्पन्न) सुन्दर तथा कमल के आसनपर विराजमान थे । उनमें से एक स्त्री थी और दूसरा पुरुष ॥18॥

ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्॥19॥

अर्थ : तत्पश्चात् माता महालक्ष्मी ने पुरुष को ब्रह्मन ! विधे ! विरिंच! तथा धातः ! इस प्रकार सम्बोधित किया और स्त्री को श्री ! पद्मा ! कमला ! लक्ष्मी ! इत्यादि नामों से पुकारा ॥19॥

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥20॥

अर्थ : इसके बाद महाकाली और महासरस्वती ने भी एक - एक जोड़ा उत्पन्न किया । इनके भी रूप और नाम मैं तुम्हें बतलाता हूं ॥20॥

नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वे ताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्॥21॥

अर्थ : महाकाली ने कण्ठ में नील चिह्न से युक्त, लाल भुजा, श्वेत शरीर और मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाले पुरुष को तथा गोरे रंग की स्त्री को जन्म दिया ॥21॥

स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥22॥

अर्थ : वह पुरुष रुद्र, शंकर, स्थाणु, कपर्दी और त्रिलोचन के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा स्त्री के त्रयी, विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरा और स्वरा – ये नाम हुए ॥22॥

सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते॥23॥

अर्थ : राजन् ! महासरस्वती ने गोरे रंग की स्त्री और श्याम रंग के पुरुषको प्रकट किया । उन दोनों के नाम भी मैं तुम्हें बतलाता हूं ॥23॥

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥24॥

अर्थ : उनमें पुरुष के नाम विष्णु, कृष्ण, हृषीकेश, वासुदेव और जनार्दन हुए तथा स्त्री उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुंदरी, सुभगा और शिवा - इन नामों से प्रसिद्ध हुई ॥24॥

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥25॥

अर्थ : इस प्रकार तीनों युवतियाँ ही तत्काल पुरुष को प्राप्त हुईं । इस बात को ज्ञान नेत्रवाले लोग ही समझ सकते हैं । दूसरे अज्ञानीजन इस रहस्य को नहीं जान सकते ॥25॥

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥26॥

अर्थ : राजन् ! महालक्ष्मी ने त्रयीविद्यारुपा सरस्वती को ब्रह्मा के लिये पत्नीरुप में समर्पित किया, रुद्र को वरदायिनी गौरी तथा भगवान् वासुदेव को लक्ष्मी दे दी ॥26॥

स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥27॥

अर्थ : इस प्रकार सरस्वती के साथ संयुक्त होकर ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया और परम पराक्रमी भगवान् रुद्र ने गौरी के साथ मिलकर उसका भेदन किया ॥27॥

अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्॥28॥

अर्थ : राजन् ! उस ब्रह्माण्ड में प्रधान (महत्तत्त्व) आदि कार्यसमूह – पंचमहाभूतात्मक समस्त स्थावर - जंगमरुप जगत् की उत्पत्ति हुई ॥28॥

पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वशरः॥29॥

अर्थ : फिर लक्ष्मी के साथ भगवान् विष्णु ने उस जगत् का पालन-पोषण किया और प्रलयकाल में गौरी के साथ महेश्वर ने उस सम्पूर्ण जगत् का संहार किया ॥29॥

महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्॥30॥

अर्थ : महाराज ! महालक्ष्मी ही सर्वसत्त्वमयी तथा सब सत्त्वों की अधीश्वरी हैं । वे ही निराकार और साकार रुप में रहकर नाना प्रकार के नाम धारण करती हैं ॥30॥

नामान्तरैर्निरुप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ॐ॥31॥

अर्थ : सगुणवाचक सत्य, ज्ञान, चित्, महामाया आदि नामान्तरों से इन महालक्ष्मी का निरुपण करना चाहिये । केवल एक नाम (महालक्ष्मीमात्र) – से अथवा अन्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से उनका वर्णन नहीं हो सकता ॥31॥

अतः चतुर्भुजा महालक्ष्मी ही सारे शक्तियों की मूल हैं, इसलिए चतुर्भुजा महालक्ष्मी जी के स्वरूप को काउंसिल के तत्त्वावधान में 51 शक्तिपीठों से लाए गए ज्योत के साथ स्थापित करना है ताकि सीतामढ़ी के इस स्थान को महाशक्ति का एक प्रमुख केंद्र बनाया जा सके।

मां सीताजी को श्रीभगवती स्वरूप में स्थापित करने के लिए श्रीराम-जानकी स्थान ही क्यों?

सीतामढ़ी स्थित पुनौरा धाम मंदिर से चार किलोमीटर दूर दक्षिण पश्चिम में एक गांव राघोपुर बखरी है। तकरीबन 3,000 लोगों की जनसंख्या वाले इस छोटे से गांव की पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्ता को बहुत कम लोग जानते हैं। वैसे तो सीतामढ़ी में माता सीताजी के प्राकट्य को लेकर दो भिन्न मान्यताएं हैं। एक स्थान है- पुनौरा धाम तथा दूसरा- जानकी स्थाना दोनों पर भिन्न-भिन्न रूप से लोगों की आस्था व विश्वास है, लेकिन अगर सीतामढ़ी में सबसे प्राचीन मंदिर के विषय में पूछा जाए तो राघोपुर बखरी स्थित श्रीराम जानकी स्थान का ही नाम आता है। जीर्ण-शीर्ण अवस्था पूर्ण इस मंदिर में आज भी भगवान के गर्भ गृह वाले दीवार पर सन् 1193 में निर्मित होने की जानकारी प्राप्त होती है। अर्थात् आज से लगभग 833 वर्ष पुराना स्थान है यह।

इस श्रीरामजानकी मठ को लोग स्थानीय जनकपुरधाम के नाम से जानते हैं। इसकी निर्माण शैली, वास्तु और सजावट नेपाल के प्रसिद्ध जनकपुर धाम से मेल खाती है।

इस स्थान के महंत श्रीरामलीला दास जी बताते हैं कि उनके दादा गुरु बताते थे कि जब इस मंदिर का निर्माण हुआ था तो मंदिर की चारदीवारी तकरीबन 20 फीट ऊंची थी और मंदिर का भाग तकरीबन एक बीघे में फैला था। वे बताते हैं कि यहां नौ पीढ़ी से उनके पूर्वज महंत इस स्थान का देख-रेख कर रहे हैं। आज भी इस मंदिर में पूर्वी भारत के तकरीबन 2000 से 3000 वर्ष पुराने 'टेराकोटा ब्रिक बंगाली आर्किटेक्चर' की झलक देखी जा सकती है जो मुगलकालीन सभी बंगाली मंदिरों में सामान्य है।

मंदिर का मुख्य आकर्षण गर्भगृह के प्रवेश के बायीं ओर लगा विशाल घंटा है, जिसकी शोभा अतुलनीय है। घंटे का वजन तकरीबन 400 किलोग्राम है। इसकी धातु दमामी मठ, नौलखा मंदिर, जनकपुर से मिलती जुलती है। इस घंटा में जंग का कोई निशान नहीं है। इसकी संरचना सम्मोहित करती है। घंटे के नीचे चरण पादुका स्थित है जिसपर ' श्री चतुर भुजाय नमः' अंकित है। श्रीराम जानकी स्थान के पास रहने वाले एक ग्रामीण श्री भोला ठाकुर बताते हैं कि एक समय सुबह-सुबह इस घंटे की आवाज़ पास के 10 गांव तक जाती थी। घंटे की टनकार सुनकर ही लोगों की नींद खुलती थी।

यहाँ आज भी गर्भ गृह की रक्षा करते हैं श्रीजटायु भगवान और श्रीहनुमानजी

महंत श्रीरामलीला दास बताते हैं कि इस स्थान पर दर्जनों बार भूकंप आया। बहुत नुकसान हुआ। पांच बार तो ऐसी क्षति पहुंची कि पूरा मंदिर परिसर ही ढह गया। मंदिर परिसर के लगभग हर दीवार में दरारें आ गईं, मगर आश्चर्य का विषय है कि श्रीराम जानकी स्थान के गर्भ गृह की दीवार आज भी वैसे ही है। महंत श्रीरामलीला दास बताते हैं कि उनके गुरु ब्रह्मलीन रामकृष्ण दास जी कहते थे कि यहां के गर्भ गृह में श्रीराम जानकी जी की रक्षा गरुड़ स्वरूप में श्री जटायु भगवान और श्रीहनुमानजी सदैव करते रहेंगे। गर्भ गृह की दीवार पर बाईं ओर गरुड़ स्वरूप में जटायु भगवान सावधान की मुद्रा में विराजमान हैं तो वहीं दाईं ओर श्रीहनुमानजी हैं।

महंत श्रीरामलीला दास जी बताते हैं कि गरुड़ जी ने सबसे पहले श्रीजटायू रूप में माता सीताजी की रक्षा की थी। रावण के साथ हवाई युद्ध किया। जटायु के प्रयास सफल नहीं हुए और वह बुरी तरह घायल हो गए। श्रीजटायु जी ने ही प्रभु श्रीरामजी को मां सीताजी के अपहरण के बारे में बताया। श्रीजटायु जी की वीरता श्रीरामजी के लिए प्रेरणा बनी और उन्होंने मां सीताजी को खोजने के लिए वानर सेना का साथ लेकर युद्ध किया था। वहीं, श्रीसीतारामभक्त पवनसुत हनुमानजी की भक्ति के क्या ही कहने।

मान्यता

कहते हैं कि पुराने समय में जब भी इस क्षेत्र के लोगों के प्राण संकट में होते थे या आर्थिक तंगी से जूझ रहे होते थे तो इस मंदिर में वो विशेष अनुष्ठान करने आते थे। दूर-दूर से लोग यहां आते थे। आज भी कुछ अनुभवी लोग इस विषय को जानते हैं। इसी

मान्यता से अभिभूत होकर यहां कई वर्षों तक 24 घंटे संकीर्तन भी चलता रहा था।

ऋषि विश्वामित्र जी का यहां आकर ध्यान करने का उल्लेख

महंत श्रीरामलीला दास जी बताते हैं कि उन्हें इस मठ के पूर्व महंत बताते थे कि उनके पूर्वज गुरु कहा करते थे कि ऋषि विश्वामित्र जी कई बार इस स्थान पर आए। यहां ऋषि विश्वामित्र जी घंटों विहार कर ध्यान करते थे और इसे ध्यान योग्य मनोरम स्थल बताते थे।

ऋषि की इसी ध्यान- परंपरा के लिए सीतामढ़ी का यह सबसे बड़ा ध्यान केंद्र माना जाता है। भले ही प्राकट्य स्थल के लिए कई मान्यताएं हों, लेकिन यह 834 वर्ष पुराने सीतामढ़ी के सबसे प्राचीन मठ के रूप में आज हम सबके सामने है। यह स्थल संतों की ऐसी तपोस्थली हुई कि श्रीराम जानकी मंदिर स्थान के ठीक सामने दो सिद्ध-साधक - संतों की आज भी समाधि स्थल देखी जा सकती है। कहते हैं कि इन संतों ने तपस्या करते-करते सशरीर ही समाधि ले ली। बहुत से लोग इसे ऋषि विश्वामित्र जी की कृपा का साक्षात परिणाम मानते हैं।

ऐतिहासिक विरासत

श्रीरामजानकी मठ की ऐतिहासिक विरासत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। पूर्व में यह इलाका जंगल से घिरा था। विश्वामित्र ऋषि जी की ध्यान-परंपरा का निर्वहन करते हुए यहां के लोकप्रिय सिद्ध संत श्रीरघुनाथ महाराजजी कुटिया बनाकर तप करते थे। उनके ज्ञान व तप की चर्चा विश्वभर में थी। वो जब इस स्थान पर ध्यान लगाते थे तो उनके कई दिनों तक समाधि-मुद्रा में ही लीन रहते थे।

उन दिनों दरभंगा महाराज के ख्याति की चर्चा बहुत प्रचलित थी। एक बार दरभंगा महाराज संत श्रीरघुनाथ महाराजजी के दर्शन हेतु इस श्रीराम जानकी स्थान पर हाथी से आ रहे थे। एक तपस्वी साधक के सामने हाथी से आ रहे दरभंगा महाराज के इस विचार से सिद्ध संत रघुनाथ महाराजजी नाराज़ हुए और वह जिस चबूतरे पर बैठे थे, अपनी साधना-तप से ऐसा प्रताप दिखाया कि वह चबूतरा ही उन्हें बिठाए हुए लेकर चल पड़ा और जाकर दरभंगा महाराज के सामने रुका। यह देख दरभंगा महाराज घोर आश्चर्य में पड़ गए। वो हाथी से उतरे और संत के सामने शाष्टांग दण्डवत हो गए, अपनी गलती स्वाकारी । दरभंगा महाराज की ओर से उन्होंने संत श्रीरघुनाथ महाराजजी को इस स्थान के विस्तार हेतु 250 एकड़ भूमि दान में दी, ताकि धार्मिक गतिविधियों और मंदिर की सेवा के लिए यहां आर्थिक संसाधन बने रहें। लंबे समय तक यह मठ धार्मिक आयोजनों का केंद्र रहा, लेकिन कालांतर में संरक्षण की कमी और प्रशासनिक उपेक्षा के कारण इसकी संपत्ति पर अतिक्रमण होता गया।

बाद में चलकर संत रघुनाथ महाराज ने भी तपस्थल पर ही जीवित समाधि ले ली थी। तीन दशक पूर्व तक इस स्थान पर श्रीरामनवमी, झूलन व दशहरा के अवसर पर विभिन्न धार्मिक उत्सव धूमधाम के साथ आयोजित किए जाते थे। विशाल जुलूस, आतिशबाजी, ढोल नगाड़े के साथ घुड़दौड़ देखने इलाके के लोग बहुत दूर-दूर से आते थे। बाज़ार में अखाड़ा होता था, जिसमें बाहर से पहलवान भी शामिल होते थे। मठ में संत व राहगीरों को आश्रय मिलता था। वर्तमान महंत रामलीला दासजी बताते हैं कि 1983 से वे मठ का कार्य संभाल रहे हैं।

वर्तमान स्थिति

सीतामढ़ी में डुमरा प्रखंड के बेरबास पंचायत के राघोपुर बखरी गांव में स्थापित ऐतिहासिक श्रीरामजानक का विशाल भवन आज खंडहर बन चुका है। खंडहर हो रहे मठ के भवन की भव्यता, इस पर उकेरे गए शिल्प व स्थापत्य इसके ऐतिहासिक व कलात्मक महत्व को रेखांकित करते हैं। मठ प्रांगण चारों ओर से विशाल दो मंजिले भवन से घिरा है। प्रांगण के भीतर ही आकर्षक श्रीरामजानकी मंदिर है, जिसके दरवाजे पर खुदे लेख में मठ के संवत 1193 में महंत रघुनाथ दास महाराज द्वारा

स्थापित होना अंकित है। मुख्य द्वार से अंदर जाने के बाद श्रीरामजानकी मंदिर जाने के लिए एक और द्वार है। मंदिर द्वार प्रवेश करते ही बाईं ओर एक आयताकार अहाता है जिसमें सांस्कृतिक संध्या आयोजित होते थे। वहीं एक ओर संतों की बैठक का खुला स्थान था तथा दाईं ओर कुछ कमरे बने थे जिसमें संत निवास करते थे। मंदिर व अन्य भवनों की भव्यता, पुरानी शैली के झरोखे, पत्थर के खंभे व बरामदे, इस पर उकेरे गए शिल्प तत्कालीन स्थापत्य कला का बेहतरीन नमूना है। पत्थर से बने स्तंभ में टंगा साढ़े बारह मन वजनी घंटा भी आकर्षक है। लेकिन पीड़ादायक रहा कि देखरेख की कमी और वर्षों की उपेक्षा के कारण ये सारा कुछ खंडहर बनकर दिन-प्रतिदिन धाराशायी होता गया।

श्रीरामजानकी मठ का भव्य गुंबद और नक्काशीदार दीवारें अब जर्जर हो चुकी है। जहां कभी श्रद्धालु राम जानकी की भक्ति में लीन रहते थे, आज वहां सन्नाटा पसरा रहता है। छत ढह चुकी हैं, दीवारों में दरारें आ गई हैं और परिसर में जंगली घास उग आई हैं।

भूमि जो 'रामायण रिसर्च काउंसिल' को बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद से आवंटित हुई है और 25 अप्रैल 2026 को बिहार के मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी ने यहां आकर प्राचीन श्रीरामजानकी मठ के जीर्णोद्धार हेतु शिलापूजन किया है, उससे पूरे प्रदेश के लोगों में एक आस जग चुकी है।

केवल मंदिर बनाना उद्देश्य नहीं, विश्व की नारी-आदर्श का एक 'सांस्कृतिक केंद्र' बनाने का संकल्प:

'रामायण रिसर्च काउंसिल' का उद्देश्य सीतामढ़ी में केवल मंदिर बनाना ही नहीं है, बल्कि नारी शक्ति का एक ऐसा केंद्र स्थापित करना है, जो विश्व की नारी शक्ति का एक केंद्र बने। इस विषय की नितांत आवश्यकता इसलिए है क्योंकि आज विश्व में एक भी ऐसा स्थान नहीं है जहां नारी शक्ति के सामर्थ्य पर शोध हो रहा हो । यह सीतामढ़ी में इसलिए विशेष होगा, क्योंकि एक तरफ हमारे आराध्य प्रभु श्रीरामजी के जन्मस्थान पर अयोध्या में भव्य मंदिर को हम 'राष्ट्र-मंदिर' मानते हैं तो वहीं सीतामढ़ी में जगतजननी मां जानकीजी का जन्म तो नहीं भूमि से उद्भव हुआ अर्थात प्राकट्य हुआ, ऐसे में सीतामढ़ी के पूरे प्राकट्य क्षेत्र को ही हम नारी- आदर्श के एक 'सांस्कृतिक केंद्र' के रूप में विकसित करना चाहते हैं।

सीतामढ़ी को शक्ति क्षेत्र के रूप में विकसित करने का संकल्प:

धन्य है सीतामढ़ी की धरा जहां मां सीताजी ने अवतार लिया। काउंसिल ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित अपने ग्रंथ (1250 पृष्ठों का) 'श्रीरामलला - मन से मंदिर तक में एक आलेख में पूरी सीतामढ़ी की धरती को ही ऊर्जा का पुंज बताया, जहां से जगतजननी श्रीभगवती जानकी जी प्रकट हुई हैं। उस आलेख में वर्णित है कि क्यों मिथिला की घरा इतनी प्रखर है और ऊर्जावान है, क्योंकि उस धरा से राज-राजेश्वरी पराशक्ति मां जगदम्बा ने स्वयं अवतार लिया है। अत: काउंसिल पूरे सीतामढ़ी क्षेत्र को ही शक्ति क्षेत्र के रूप में विकसित करना चाहती है।

हर नारी में 'सीता तत्त्व' / 'भगवती-तत्त्व' भाव-बोध को उद्धृत करने हेतु काउंसिल का प्रयास:

माता सीताजी भूमिजा हैं, भूमि से प्रकट हुईं तथा एक साधारण नारी स्वरूप में पृथ्वी पर आकर नारी - आदर्श के एक प्रेरणा-स्वरुप को स्थापित किया है और फिर नारी - शरीर में समस्त लीला कर भूमि की पुत्री 'भूमि' में ही समाजाती हैं।

त्रेतायुग में जनकपुर में जगतजननी मां जानकी जी के स्वयंवर में जिस पिनाक धनुष को उठाने के लिए अच्छे-अच्छे राजाओं के पसीने छूट जाते हैं, उसे मां सीताजी अपने महल में गृह कार्य हेतु एक तुच्छ वस्तु की भांति प्रतिदिन इधर से उठाकर उधर करती रहीं थीं। जब इस विषय की जानकारी राजा जनक जी को हुई तो उन्हें घोर आश्चर्य हुआ और वह समझ गए कि उनकी पुत्री जानकी जी कोई साधारण कन्या नहीं, बल्कि साक्षात अवतार है। क्योंकि वह धनुष कोई साधारण धनुष नहीं था, बल्कि भगवान शिव का

बहुत ही शक्तिशाली और चमत्कारिक धनुष था। इस धनुष को उठाना साधारण पराक्रम नहीं था। इसलिए 'रामायण रिसर्च काउंसिल के लिए यह शोध का विषय है कि आखिर वो कौन सी शक्ति है जो जानकी जी के पास थी।

'रामायण रिसर्च काउंसिल' ने एक पुस्तक 'श्रीभगवती सीता - महाशक्ति साधना' का प्रकाशन किया है। इस पुस्तक में कई संतों ने यह विचार रखा है कि दुर्गा सप्तशती में मार्कण्डेय ऋषि जी जिस सौम्य स्वरुप की चर्चा करते हैं, वह मां सीताजी का ही स्वरुप है। पुस्तक में मां सीताजी की आराधना के साथ कई विषयों को तथ्यपूर्ण तरीक से प्रस्तुत किया गया है जो प्रमाणित करता है कि मां सीताजी साक्षात भगवती की अवतार हैं। मार्कण्डेय ऋषि जी दुर्गा सप्तशती में लिखते हैं-

विद्या: समस्ता: तव देवि भेदा:। स्त्रिय: समस्ता: सकला जगत्सु ।।

अर्थात- सभी विद्याएं देवी के ही विभिन्न स्वरूपों की अभिव्यक्ति है और जगत की समस्त नारीशक्ति में उन जगदम्बा महाशक्ति श्रीभगवती का ही प्रतिरुप है।

अर्थात- हर नारी में 'सीता-तत्त्व' अर्थात 'भगवती-तत्त्व है। उसी तत्त्व के कारण कोई भी नारी साधारण नहीं है और यही उनमें तत्त्व, हर एक नारी को एक विशिष्ट शक्ति भी प्रदान करता है जिससे वह एक अच्छी पुत्री, बहन, मां, गृहिणी समेत कई स्वरूपों में अपनी भूमिका निभाते हुए एक साथ कई कार्यों को करने में दक्ष होती हैं। यह बहुत छोटा विषय है। शक्ति के उपासक कई संत कहते हैं कि एक नारी अगर शक्ति का आह्वान करे तो जितना एक पुरुष दस वर्ष में शक्ति की उपासना कर प्राप्त नहीं कर सकता, उतना एक नारी शक्ति दस महीने में शक्ति को आह्वान कर द्रवित कर सकती है।

लेकिन वह 'सीता-तत्त्व' अर्थात 'भगवती- तत्त्व' हर एक नारी में क्या है, यह शोध का विषय है। इसलिए 'रामायण रिसर्च काउंसिल' 'जानकी शोध केंद्र' की स्थापना करना चाहती है। इस निमित्त अध्ययन केंद्र, पुस्तकालय और डिजिटल संग्रहालय का निर्माण भी प्रस्तावित है।

काउंसिल अंतर्गत पुस्तक 'श्रीभगवती सीता-महाशक्ति साधना' को विभिन्न भाषाओं में कई देशों में अनुवाद कर तथा मां जानकी जी के शोध-साहित्य के माध्यम से जीवन-आदर्श के प्रसार का संकल्प:-

'रामायण रिसर्च काउंसिल' यह मानती है कि मां सीताजी के जीवन- आदर्शों को हम जितना प्रसारित करेंगे, उतना ही हम नारी सशक्तिकण को बल दे पाएंगे। नारी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनमें जो 'सीता-तत्त्व' अर्थात 'भगवती-तत्त्व' का समावेश है, उसका बोध कराना बहुत आवश्यक है।

ऐसा नहीं है कि भारत की जो माता है, उन्हीं में 'सीता-तत्त्व' अर्थात 'भगवती-तत्त्व' है और उदाहरणस्वरूप कोई फ्रांस या अन्य देशों में माता है, तो उनमें यह तत्त्व नहीं है। काउंसिल से जुड़े संतों का चिंतन है कि दुनिया की हर माता में 'भगवती - तत्त्व' है, बस आवश्यकता है उसे जगाने की। माताओं के उन्हीं तत्त्व का उन्हें बोध कराने के लिए हम काउंसिल के तत्त्वावधान 'श्रीभगवती सीता-महाशक्ति साधना को हम दूसरे संस्करण में और वृहद कर रहे हैं। कई भाषाओं में अनुवाद कर रहे हैं। इस पुस्तक पर जब हम चर्चा करेंगे, विश्व की नारी समाज को त्रेतायुग के विषय में बताएंगे कि कैसे उस काल में भारत में एक जगह है एक साधारण नारी ने जन्म नहीं बल्कि भूमि से प्राकट्य लिया था और उन्होंने पूरे नारी समाज के जीवन- आदर्शों को प्रेरणा दिया, जिस पर हर नारी को विचार करना चाहिए और साथ ही यह भी बताएंगे कि उन नारी ने यह भी संदेश दिया था कि हर नारी के भीतर एक अदम्य एवं अलौकिक शक्ति छिपी है, जिसे एक ऋषि मार्कण्डेय जी ने उन 'शक्ति' एवं उनके विभिन्न स्वरुपों का वर्णन किया। इन विषयों को जब हम दुनियाभर की मातृ-शक्तियों को उनकी भाषा में समझाएंगे और उन्हें उन्हीं की भाषा में उन शक्ति-स्वरुपा 'श्रीभगवती' के आह्वान का गूढ़ रहस्य समझाएंगे और हमारे शोध संस्थानों से जो अमृत-रुपी विषय उभरेगा, उसका भी संदर्भ देंगे। निस्संदेह पराम्बा श्रीभगवती कृपा उन पर भी होगी और मां सीताजी के जीवन-दर्शन का प्रसार होगा।

रामायण रिसर्च काउंसिल को जानिए

'रामायण रिसर्च काउंसिल' समाज एवं राष्ट्रहित में कई प्रकल्पों पर कार्य कर रही है। काउंसिल शायद देश की एकमात्र ऐसी संस्था है जो हमारे जीवन की आधार जगतजननी मां सीताजी की प्राकट्य-स्थली सीतामढ़ी (बिहार) को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए भी कार्य करती है और हमारे आराध्य प्रभु श्रीरामलला के जन्म-स्थान अयोध्या में 492 वर्षों के मंदिर संघर्ष पर अब तक का सबसे बड़ा साहित्य-ग्रंथ भी तैयार करती है। ग्रंथ की संक्षिप्त चर्चा इस पत्रिका के अंत में है।

काउंसिल के परमाध्यक्ष पवनसुत श्री हनुमान जी महाराज हैं।

काउंसिल संस्कृति एवं संस्कार को जीवंत रखने में साहित्य को बड़ा माध्यम मानती है, यही कारण है कि काउंसिल साहित्य-सृजन हेतु शोध-कार्यों पर विशेष ध्यान देती रही है।

1) अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित 1250 पृष्ठों का एक ग्रंथ 'श्रीरामलला - मन से मंदिर तक' हिन्दी भाषा में पूर्ण हो चुका है। अंग्रेजी भाषा में अनुवाद जारी है।
2) माता सीताजी की आराधना एवं भक्ति पर आधारित पुस्तक 'श्रीभगवती सीता - महाशक्ति साधना' वर्ष 2023 में जानकी नवमी के पवित्र अवसर पर नई दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है।
3) काउंसिल पिछले तीन वर्षों से अधिक समय से संस्कृत भाषा में पाक्षिक पत्रिका 'रामायण वार्ता' का प्रकाशन का कार्य भी करती रही है। वहीं, संस्कृत भाषा के प्रसार के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु 60 दिनों के कोर्स पर आधारित एक पुस्तिका 'देवभाषा संस्कृत सीखें' को भी तैयार किया गया है तथा जगह-जगह 'देवभाषा संस्कृत-कार्यशाला' का भी आयोजन किया जाता रहा है। इस निमित्त देवभाषा संस्कृत पर कार्य करने वालों को हर वर्ष हम 'संस्कृत भूषण सम्मान' भी प्रदान करते हैं। गत 'संस्कृत-भूषण-सम्मान' वर्ष 2025 में 06 अगस्त को आयोजित हुआ था।
4) सनातन विचार को प्रसार करने वाली पुस्तक 'सनातन संग भारत', जिसका विमोचन बागेश्वर सरकार आचार्य धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी की उपस्थिति में पद्मविभूषण जगदगुरु पूज्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य महाराज, पटना (बिहार) के गांधी मैदान में 06 जुलाई 2025 को 'सनातन महाकुंभ' आयोजन में कर चुके हैं।
5) वर्ष 2025 में आयोजित महाकुंभ में अधिकांश प्रमुख गतिविधियों को चित्र सहित सम्मिलित कर इस विषय पर अब तक के सबसे वृहद साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन' को हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में कॉफीटेबल बुक के रूप में तैयार किया गया है।
6) वैदेहीनंदन पंडित वेदांत जी महाराज (12 वर्षीय) द्वारा बालमन को सांस्कृतिक विचारों से जोड़ने वाले पद्य 'वेदांत पुष्प' को तैयार किया गया है। बच्चों में संस्कृति, संस्कार, अनुशासन व नैतिक संवर्धन हेतु काउंसिल ने पुस्तक 'मानस - ज्ञान' को तैयार किया है। इस पुस्तक के ही आधार पर काउंसिल की एक टीम 'रामायण मंच' प्रकल्प के माध्यम से बच्चों को संस्कारित करती रही है। इस पुस्तक के लेख भी वैदेहीनंदन वेदांत जी ही हैं। वैदेहीनंदन जी मां सीताजी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों एवं महिमा पर आधारित कई पुस्तकों का क्रमवार लेखन भी कर रहे हैं जिसका शीघ्र प्रकाशन भी किया जाना प्रस्तावित है।
7) लोक परंपराओं को दर्शाता पद्य 'अवधि लोकगीतों में सीता-राम' को जनमानस हेतु तैयार किया है।
8) 'अमृतकाल की सांस्कृतिक यात्रा' को भी काउंसिल ने तैयार किया है जिसमें विगत कई वर्षों में कई मठ-मंदिरों के नवोत्थान हेतु 'सांस्कृतिक नवचेतना' का सचित्र उल्लेख है।

हम माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं कि आपने 10 मार्च 2025 को गुजरात के गांधीनगर से मां सीताजी के प्राकट्य स्थल पुनौरा धाम (सीतामढ़ी) में मां सीताजी के भव्य मंदिर निर्माण को लेकर न केवल घोषणा की, बल्कि बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के साथ मिलकर 08 अगस्त 2025 को सीतामढ़ी में मां सीताजी के भव्य मंदिर के लिए पुनौरा धाम में आधारशिला भी रखी।

'श्रीजानकी-कथा' के माध्यम से मां जानकीजी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों का प्रसार है उद्देश्य

रामायण रिसर्च काउंसिल एक ऐसी संस्था है जो प्रारंभ से ही राष्ट्रहित में साहित्य-सृजन का कार्य करती रही है। काउंसिल का उद्देश्य सीतामढ़ी में केवल एक मंदिर का निर्माण का नहीं रहा, बल्कि मां सीताजी पर एक शोधपरक साहित्य का सृजन करना रहा, उन साहित्य का प्रसार करना रहा, मां सीताजी के प्रेरणादायी जीवन आदर्शों को श्रीजानकी-कथा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना रहा। इसके कई कारण हैं और केवल एक आलेख में ये व्यक्त कर पाना असंभव है, परंतु काउंसिल के मूल भाव को व्यक्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मां सीताजी, त्याग, धैर्य, निष्ठा और मर्यादा की प्रतीक मानी जाती हैं। उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने हर परिस्थिति में सत्य और धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा। आज के समय में, जब समाज तेजी से बदल रहा है और नैतिक मूल्यों में गिरावट की चर्चा होती है, ऐसे में मां सीता के आदर्शों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

मंदिर निर्माण आस्था और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक होता है, लेकिन केवल भौतिक संरचना तक सीमित रह जाना पर्याप्त नहीं है। असली उद्देश्य उन मूल्यों को आत्मसात करना होना चाहिए, जिनका प्रतिनिधित्व मां सीता करती हैं। यदि उनके आदर्शों—जैसे संयम, समर्पण, सहनशीलता और पारिवारिक मूल्यों—को शिक्षा, सामाजिक संवाद और अंतरराष्ट्रीय मंचों के माध्यम से फैलाया जाए, तो यह मानवता के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती रुचि को देखते हुए, यह एक उपयुक्त समय है जब हम अपने प्राचीन आदर्शों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करें। योग, आयुर्वेद और ध्यान की तरह ही, यदि मां सीता के जीवन-दर्शन को भी प्रभावी ढंग से दुनिया के सामने रखा जाए, तो यह न केवल भारत की सांस्कृतिक छवि को मजबूत करेगा, बल्कि विश्व समाज को भी एक सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा।

आज का वैश्विक समाज कई चुनौतियों से जूझ रहा है—परिवारिक विघटन, नैतिक असंतुलन, और व्यक्तिगत स्वार्थ की बढ़ती प्रवृत्ति। ऐसे समय में मां सीता के आदर्श लोगों को संतुलन, सहनशीलता और रिश्तों के प्रति जिम्मेदारी का संदेश देते हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए।

इसके अलावा, भारतीय सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। जैसे रामायण ने विभिन्न देशों और संस्कृतियों को प्रभावित किया है, वैसे ही मां सीता के जीवन-दर्शन को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत कर विश्व में सकारात्मक संवाद को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे भारत की सांस्कृतिक पहचान और "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को भी बल मिलता है।

मां सीता के आदर्श महिलाओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हैं। उनका व्यक्तित्व केवल त्याग तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, दृढ़ता और निर्णय क्षमता का भी प्रतीक है। इन पहलुओं को सामने लाकर एक संतुलित और सशक्त समाज के निर्माण की दिशा में प्रेरणा दी जा सकती है।

मां जानकी जी के जीवन-आदर्शों को वैश्विक-स्तर पर ले जाने संबंधी केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के विचारों से प्रेरित होकर रामायण रिसर्च काउंसिल ने पहले भारत में और फिर धीरे-धीरे वैश्विक स्तर पर जगह-जगह श्रीजानकी-कथा आयोजित करवाने का निश्चय किया है। चिंतन है कि भारतीय संस्कृति में मां सीता (माता जानकी) मात्र एक पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि धैर्य, शक्ति और शुचिता का वह उच्चतम शिखर हैं, जिसका अनुसरण कर कोई भी समाज नैतिक पतन से बच सकता है। आज

जहां महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान एक वैश्विक चुनौती बनी हुई है, वैसी स्थिति में मां जानकी जी के जीवन-आदर्शों को 'श्रीजानकी कथा' के माध्यम से प्रसार करना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का आधार बन सकता है।

जब समाज 'जानकी कथा' के माध्यम से मां सीता के त्याग और उनके स्वाभिमान को गहराई से समझेगा, तो महिलाओं के प्रति देखने के नजरिए में बुनियादी बदलाव आएगा। मां सीता 'शक्ति' का स्वरूप हैं। समाज जब उन्हें केवल एक "अबला" के रूप में नहीं, बल्कि 'अयोनिजा' (दिव्य जन्म) और जनकनंदिनी के रूप में देखेगा, तो स्त्रियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव स्वत: जागृत होगा। यह भाव पुरुष मानस में महिलाओं को भोग की वस्तु के बजाय आदरणीय शक्ति के रूप में स्थापित करेगा।

कोई संदेह नहीं कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों की जड़ में चारित्रिक गिरावट और संस्कारों का अभाव होता है। 'जानकी कथा' के माध्यम से जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम और माता सीता के पवित्र संबंधों की चर्चा होगी, तो नई पीढ़ी को रिश्तों की मर्यादा का बोध होगा। मां सीता के पातिव्रत्य और उनके आत्मबल की गाथा अनैतिक विचारों पर अंकुश लगाने का कार्य करेगी। जब समाज नारी में 'जगदंबा' का अंश देखने लगेगा, तो आपराधिक मानसिकता का क्षय होगा।

प्राय: सीताजी को केवल उनके कष्टों के लिए याद किया जाता है, किंतु उनका वास्तविक स्वरूप साहस का है। महल के ऐश्वर्य को त्यागकर दुर्गम वनों को चुनना, रावण जैसे आततायी के सम्मुख अशोक वाटिका में निर्भीक होकर खड़े रहना और अपनी पवित्रता के लिए अग्नि-परीक्षा से गुजरना—ये घटनाएं बताती हैं कि वे कितनी साहसिक थीं। आधुनिक महिलाएं जब इस पक्ष को जानेंगी, तो वे स्वयं को कमजोर समझना बंद कर देंगी। विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहने की प्रेरणा उन्हें मानसिक रूप से सशक्त बनाएगी।

मां सीता साक्षात लक्ष्मीजी का स्वरूप हैं। जानकी कथा यह बोध कराती है कि प्रत्येक नारी में भगवती और ईश्वरीय तत्व विद्यमान है। जब एक महिला को अपनी इस आंतरिक शक्ति का आभास होता है, तो उसमें आत्मनिर्भरता का भाव स्वत: उत्पन्न होता है। वह केवल दूसरों पर आश्रित रहने के बजाय अपनी योग्यता और ईश्वरीय क्षमता पर विश्वास करना सीखती है। यह बोध उन्हें आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से स्वतंत्र होने की प्रेरणा देता है।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में धैर्य का अभाव है। माता सीता का जीवन धैर्य की पराकाष्ठा है। उन्होंने राजभवन से लेकर वनवास और फिर ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में एक एकाकी जीवन तक, हर परिस्थिति को धैर्य के साथ स्वीकार किया।

वे आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श माता और पत्नी के रूप में संस्कारों की जननी हैं। उनके जीवन से यह सीखने को मिलता है कि संघर्ष स्थाई नहीं होते, लेकिन आपका चरित्र स्थाई होता है।

'जानकी कथा' का प्रारंभ समाज में एक ऐसी चेतना का संचार करेगा जहां नारी को उसकी विलुप्त हो चुकी शक्ति का पुन: स्मरण होगा। यह आलेख इस बात पर बल देता है कि मां सीता के आदर्शों को अपनाकर हम एक ऐसे 'श्रीरामराज्य' की कल्पना कर सकते हैं, जहां महिलाएं न केवल सुरक्षित होंगी, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण में अपनी ईश्वरीय मेधा का पूर्ण उपयोग कर सकेंगी।

माता जानकी का जीवन हमें सिखाता है कि नारी केवल सृष्टि की रचना नहीं, बल्कि सृष्टि का आधार है। उनके आदर्शों को घर-घर पहुँचाना आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

रामायण रिसर्च काउंसिल जहां एक ओर सीतामढ़ी को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने हेतु लंबे समय से कार्य करती आ रही है, वहीं काउंसिल के तत्त्वावधान में 'श्रीजानकी कथा' का प्रारंभ समाज में एक ऐसी चेतना का संचार करेगा जहां नारी को उसकी विलुप्त हो चुकी शक्ति का पुन: स्मरण होगा। मां सीता के आदर्शों को अपनाकर हम एक ऐसे 'श्रीरामराज्य' की कल्पना कर सकते हैं, जहां महिलाएं न केवल सुरक्षित, सुसंस्कृत, अनुशासित, साहसिक, धैर्यवान एवं नारीत्व-संस्कार को ग्रहण कर मां सीताजी के प्रेरित होती रहेंगी, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण में अपनी ईश्वरीय मेधा का पूर्ण उपयोग कर सकेंगी।

पहली श्रीजानकी-कथा उत्तराखंड में रामनगर स्थित सीताबनी में हुई

सीताबनी का ये स्थान नैनीताल ज़िले के रामनगर के पाटकोट रेंज में है। ये त्रेतायुगीन है और इसका संदर्भ रामायण से जुड़ा है, ऐसा बताया जाता है। यहां दिनांक 16 मई 2026 को पहली श्रीजानकी कथा आयोजित हुई।

प्रथम श्रीजानकी-कथा प्रारंभ होने से पूर्व पूरे देशभर में श्रीजानकी कथा के माध्यम से श्रीजानकी जी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों के प्रसार हेतु संकल्प लेते भारत सरकार के पूर्व रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री तथा नैनीताल-उधमनगर से सांसद श्री अजय भट्ट जी (सपत्नीक)। उनके साथ पूजन पर रहे विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह-मंत्री (सेवा विभाग) श्रीमान आनंद प्रकाश हरबोला जी।

अमर उजाला 17.05.2026 Nainital

सीतावनी में पहली बार जानकी कथा

रामनगर के सीतावनी में आयोजित कथा में मौजूद। संवाद

रामनगर। रामनगर वनप्रभाग के सीतावनी में शनिवार को पहली बार जानकी कथा का आयोजन किया गया। इसमें बाल-व्यास वैदेहीनंदन वेदांत ने माता सीता के जीवन का वर्णन किया। सांसद अजय भट्ट मुख्य अतिथि थे। उन्होंने सीतावनी को सीता की तपोभूमि और लव-कुश की जन्मस्थली बताया। वैदेहीनंदन वेदांत ने कहा कि माता सीता त्याग और नारी शक्ति की प्रेरणा हैं। कथा के समापन पर आरती और भंडारा हुआ। यहां विधायक प्रतिनिधि राकेश नैनवाल, भाजपा नगर अध्यक्ष भूपेंद्र खाती, जिला उपाध्यक्ष गणेश रावत, रुचि गिरी और नीतिका भट्ट आदि मौजूद थे। संवाद

दैनिक जागरण 17.05.2026 Nainital

सीता माता का जीवन आज भी प्रेरणादायक : बाल व्यास

सीतावनी मंदिर में बाल व्यास वैदेही नंदन वेदांत की आरती उतारते सांसद • जागरण

जागरण संवाददाता, रामनगर: बाल व्यास वैदेही नंदन वेदांत ने कहा कि माता जानकी की कथा रामायण की सबसे दिव्य गाथाओं में एक है। राजा जनक की पुत्री होने से उन्हें जानकी कहा जाता है। सीता माता त्याग, सहनशीलता, नारी शक्ति की सर्वोच्च प्रति मूर्ति हैं, जिनका जीवन आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है।

शनिवार को यह बात 12 वर्षीय बाल व्यास वैदेही नंदन वेदांत ने रामायण रिसर्च काउंसिल दिल्ली की ओर से सीतावनी मंदिर में आयोजित जानकी कथा के दौरान लोगों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने प्रवचन के बीच-बीच में मधुर आवाज में गाए गए भजनों और चौपाइयों से मौजूद लोगों को भाव विभोर कर दिया। सांसद अजय भट्ट ने कहा कि रामायण रिसर्च काउंसिल का उद्देश्य मां सीता के त्याग, तप, मर्यादा एवं प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों को गांव-गांव तक पहुंचाना है। इस दौरान हनुमान धाम के आचार्य विजय, विधायक दीवान सिंह बिष्ट, विधायक सरिता आर्या, राकेश नैनवाल रहे। इस दौरान रामनगर, कोटाबाग, पाटकोट आदि गांव से लोग पहुंचे थे।

मां सीताजी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों का प्रसार

11 मई 2026 को नई दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब में प्रेस वार्ता कर देशभर में श्रीजानकी-कथा हेतु संकल्प। इस अवसर पर रामायण रिसर्च काउंसिल के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के अध्यक्ष श्री अजय भट्ट जी (माननीय सांसद), राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की अध्यक्ष पूज्य साध्वी निरंजन ज्योति जी, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरी जी महाराज आदि उपस्थित रहे। पूरे काउंसिल परिवार ने इस विषय पर सहमति व्यक्त की की श्री अजय भट्ट जी के नेतृत्व में पूरे देशभर में श्रीजानकीजी के प्रेरणादायी जीवन-आदर्शों का प्रसार किया जाएगा एवं इस हेतु श्रीजानकी-कथा का जगह-जगह आयोजन किया जाएगा।

New Delhi Edition 12.05.2026

अमर उजाला

जानकी कथा से सीता के आदर्शों का होगा प्रसार

क्लब में मौजूद बीजेपी नेता अजय भट्ट, साध्वी निरंजन व अन्य। संवाद

रामायण रिसर्च काउंसिल का एलान, 16 मई को उत्तराखंड में पहली कथा

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल अब माता सीता के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए देशभर में श्रीजानकी कथा का आयोजन करेगी। कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में हुई प्रेस वार्ता में काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने इसकी घोषणा की।

सांसद अजय भट्ट ने बताया कि पहली कथा 16 मई को उत्तराखंड के रामनगर स्थित सीताबनी में होगी। कथा का वाचन काउंसिल अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी सांदीपेंद्र जी महाराज के शिष्य बाल-व्यास वैदेहीनंदन वेदांतजी करेंगे।

अजय भट्ट ने कहा कि मां सीता का जीवन त्याग, धैर्य और नारी-शक्ति का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि जल्द ही सीता सखी समिति का गठन कर महिलाओं को इस अभियान से जोड़ा जाएगा।

संत स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरि ने कहा कि काउंसिल सीतामढ़ी को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य कर रही है। वहीं, साध्वी निरंजन ज्योति ने कहा कि माता सीता पर कार्य से नारी सशक्त होगी। संवाद

जागरण New Delhi Edition 12.05.2026

देवभूमि उत्तराखंड के सीताबनी से शुरू होगी श्रीजानकी कथा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: रामायण रिसर्च काउंसिल मां सीता के प्रेरणादायी जीवन आदर्शों को 'श्रीजानकी कथा' के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाएगी। इस देशव्यापी अभियान की शुरुआत काउंसिल देवभूमि उत्तराखंड से करेगी। कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित प्रेस वार्ता में उत्तराखंड के नैनीताल-ऊधमसिंह नगर से सांसद व काउंसिल के ट्रस्टी अजय भट्ट ने बताया कि पहली 'श्रीजानकी कथा' 16 मई को रामनगर (पाटकोट रेंज) स्थित सीताबनी में आयोजित होगी। यह स्थल रामायण काल से जुड़ा है। कथा का वाचन महामंडलेश्वर स्वामी सांदीपेंद्र जी महाराज के 12 वर्षीय शिष्य बाल व्यास वैदेहीनंदन वेदांत करेंगे।

सांसद अजय भट्ट ने कहा कि श्रीजानकी कथा का उद्देश्य केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि महिलाओं में आत्मविश्वास और 'सीता-तत्व' का बोध कराना है। उन्होंने कहा कि मां सीता के जीवन से हर नारी को त्याग, धैर्य और आत्मनिर्भरता की सीख मिलती है। अभियान को गति देने के लिए जल्द ही 'सीता-सखी समिति' का गठन किया जाएगा, जो गांव- गांव में महिलाओं को इस मुहिम से जोड़ेगी।

बिहार का सीतामढ़ी बनेगा 'शक्ति क्षेत्र': संत महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरि महाराज ने बताया कि काउंसिल बिहार के सीतामढ़ी स्थित मां सीता के प्राकट्य स्थल को 'शक्ति क्षेत्र' के रूप में विकसित कर रही है। यहां प्राचीन श्रीराम-जानकी मठ की 12 एकड़ भूमि पर 51 शक्तिपीठों की मिट्टी व ज्योत के साथ 'अखंड शक्तिपुंज' स्थापित किया जाएगा। 25 अप्रैल को मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी द्वारा यहां जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन किया जा चुका है।

हिन्दुस्तान New Delhi Edition 12.05.2026

जानकी-कथा का आयोजन 16 मई से

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल सीताजी के प्रेरणादायी जीवन आदर्शों को जानकी-कथा के माध्यम से जन-जन तक ले जाएगी। उत्तराखंड के नैनीताल-उधमसिंह नगर से सांसद और काउंसिल के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी अजय भट्ट के नेतृत्व में इसका आयोजन होगा। अजय भट्ट ने पहली जानकी-कथा 16 मई को उत्तराखंड में रामनगर के पाटकोट रेंज स्थित सीताबनी में करवाने की घोषणा की।

दैनिक भास्कर New Delhi Edition 12.05.2026

पहली श्रीजानकी-कथा 16 को सीताबनी में

मां सीता के आदर्श जन-जन तक पहुंचाएगी रामायण रिसर्च काउंसिल

NBT नवभारत टाइम्स New Delhi Edition 12.05.2026

देशभर में सुनाई जाएगी श्रीजानकी कथा

सीतामढ़ी में दिनांक 18.04.2026 को प्रेस वार्ता एवं 25.04.2026 को श्रीजानकी नवमी के अवसर पर आयोजन के निमित्त

राघोपुर बखरी स्थित मठ में काउंसिल की ओर से एक आधिकारिक जानकारी देने हेतु एक आयोजित प्रेस वार्ता आयोजित की गई। इस प्रेस वार्ता में सीतामढ़ी एवं शिवहर से जनप्रतिनिधियों के अलावा कई संत-समाज का सानिध्य प्राप्त हुआ। जनप्रतिनिधियों में सीतामढ़ी से विधायक सुनील कुमार पिंटू, रीगा से विधायक वैद्यनाथ प्रसाद, शिवहर से विधायक डॉ. श्वेता व रुन्नीसैदपुर से विधायक पंकज कुमार मौजूद रहे। इस अवसर पर विधायक सुनील कुमार पिंटू ने काउंसिल की योजनाओं से अवगत कराया तो वहीं विधायक डॉ. श्वेता ने समस्त नारी-शक्ति से इस विषय से जुड़ने की अपील की। विधायक वैद्यनाथ प्रसाद ने काउंसिल को ऐसे पवित्र कार्य में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया, तो वहीं विधायक पंकज कुमार ने सबों से काउंसिल की इस योजना से जुड़ने की अपील की।

प्रभात खबर — 19.04.2026 Sitamarhi

राघोपुर बखरी मठ के जीर्णोद्धार का शिलान्यास करेंगे सीएम

- सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण की दिशा में बड़ा कदम
- 834 वर्ष पुराने श्रीराम-जानकी मंदिर का बदलेगा स्वरूप, शक्तिपीठ व ध्यान केंद्र की होगी स्थापना

पत्रकारों को जानकारी देते काउंसिल के पदाधिकारी व विधायक गण.

होगा अखंड शक्तिपुंज स्थापित

51 शक्तिपीठों के मिट्टी व ज्योति से

हिन्दुस्तान — 19.04.2026 Sitamarhi

सीएम करेंगे राघोपुर बखरी मठ के जीर्णोद्धार का शिलान्यास

सीतामढ़ी, हिन्दुस्तान संवाददाता।

दैनिक जागरण — 20.04.2026 Sitamarhi

जिले के राघोपुर बखरी में 834 वर्ष पुराने श्रीराम जानकी मंदिर का होगा जीर्णोद्धार

- मंदिर की करीब 12 एकड़ भूखंड पर दिव्य अलौकिक शक्तिपीठ व श्री जानकी शोध संस्थान की स्थापना
- जानकी नवमी के दिन मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी करेंगे मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य का शिलान्यास

सीतामढ़ी के राघोपुर बखरी स्थित प्राचीन श्री राम जानकी मंदिर • जागरण

दैनिक जागरण
23.04.2026 Sitamarhi

श्रीराम जानकी मंदिर का शिलान्यास समारोह 25 को

संवाद सहयोगी, जागरण, सीतामढ़ी: मां जानकी जन्मभूमि सीतामढ़ी के राघोपुर बखरी स्थित अति प्राचीन श्रीराम जानकी मंदिर के जीर्णोद्धार को लेकर आगामी 25 अप्रैल को होने वाले शिलान्यास समारोह को लेकर तैयारियां जोर-शोर से जारी हैं। रामायण रिसर्च काउंसिल के सदस्यों की ओर से समारोह को भव्य व दिव्य बनाने के लिए बुधवार को प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। श्रीराम जानकी मंदिर मठ परिसर से रवाना यह प्रचार वाहन सीतामढ़ी जिले के विभिन्न प्रखंडों के साथ-साथ पड़ोसी जिला शिवहर एवं आसपास के क्षेत्रों में जाकर लोगों को शिलान्यास समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित करेगा। वाहन के माध्यम से धार्मिक कार्यक्रम की जानकारी, आयोजन का महत्व तथा सहभागिता के लिए अपील की जा रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। श्रीरामजानकी मठ के महंत रामलीला दास ने कहा कि मठ के जीर्णोद्धार से क्षेत्र की धार्मिक पहचान और अधिक सशक्त होगी तथा श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिल सकेंगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक मृत्युंजय कुमार ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। कार्यक्रम के दौरान जिला परिषद सदस्य नागेंद्र राय, राजेश सिंह, ट्रस्टी राजीव सिंह, सचिव पीतांबर मिश्र, युवा संयोजक जयराम विप्लव, कुमार स्मृति, ऋतु ठाकुर, प्रणिता ठाकुर समेत दर्जनों कार्यकर्ता सक्रिय रूप से मौजूद रहे। बताते चलें कि आगामी कि 25 अप्रैल को जानकी नवमी के दिन मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी जीर्णोद्धार कार्य की आधारशिला रखेंगे।

> शिलान्यास समारोह को लेकर प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना, लोगों को शामिल होने के लिए किया जाएगा आमंत्रित

प्रचार वाहन को रवाना करते रामायण रिसर्च काउंसिल के राष्ट्रीय महासचिव व अन्य।

दैनिक भास्कर
25.04.2026 Sitamarhi

तैयारी पूरी • मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी मंदिर परिसर में विशेष पूजा-अर्चना करेंगे

833 वर्ष पुराने बखरी मठ के जीर्णोद्धार कार्य का आज सीएम करेंगे शिलान्यास

रामायण संस्कृति से जुड़े इंडोनेशिया-बाली से भी लाई गई पवित्र मिट्टी

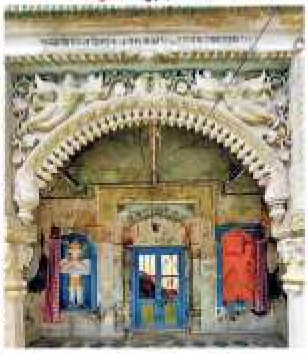

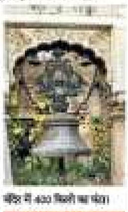

1500 ईस्वी की अनमोल विरासत

रोजगार और समृद्धि के नए द्वार खुलेंगे

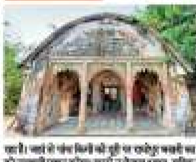

दैनिक जागरण
25.04.2026 Sitamarhi

राघोपुर बखरी श्रीराम जानकी मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ आज

संवाद सहयोगी, जागरण • सीतामढ़ी: रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से जानकी नवमी के दिन शनिवार को सीतामढ़ी के राघोपुर बखरी स्थित अति प्राचीन श्रीरामजानकी मंदिर मठ के जीर्णोद्धार कार्य के शिलान्यास को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। निर्धारित कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी विधिवत मंत्रोच्चार के बीच शिलापूजन करेंगे तथा पुनौराधाम में आयोजित जानकी जन्मोत्सव के अवसर पर सीतामढ़ी महोत्सव का उद्घाटन एवं शुभारंभ करेंगे। कार्यक्रम को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है। शुक्रवार को मुख्यमंत्री के विशेष सुरक्षा गार्ड (एसएसजी) द्वारा कार्यक्रम स्थल का स्थलीय निरीक्षण किया गया और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया। प्रशासन की ओर से हेलीपैड निर्माण, पार्किंग व्यवस्था, भीड़ नियंत्रण, ट्रैफिक प्रबंधन तथा विधि-व्यवस्था को लेकर व्यापक इंतजाम किए गए हैं। स्थानीय सांसद देवेश चंद्र ठाकुर व नगर विधायक सह पूर्व मंत्री सुनील कुमार पिंटू ने भी स्थल का निरीक्षण कर तैयारी का जायजा लिया। श्रीरामजानकी मठ के महंत रामलीला दास ने बताया कि यह मठ लंबे समय से श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र रहा है, लेकिन समय के साथ इसकी संरचना जर्जर हो गई थी। अब इसके जीर्णोद्धार से न केवल श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि धार्मिक गतिविधियों को भी नया आयाम प्राप्त होगा। उन्होंने अधिक से अधिक श्रद्धालुओं से इस ऐतिहासिक अवसर पर उपस्थित होकर पुण्य लाभ अर्जित करने की अपील की है। इस अवसर पर जिला परिषद सदस्य नागेंद्र राय, राजेश सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे। काउन्सिल के प्रमुख सदस्यों में ट्रस्टी राजीव सिंह, सचिव पीतांबर मिश्र, युवा संयोजक जयराम विप्लव, कुमार स्मृति, ऋतु ठाकुर, प्रणिता ठाकुर समेत दर्जनों कार्यकर्ता आयोजन की तैयारियों में सक्रिय रूप से जुटे हुए थे।

> निर्धारित कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी विधिवत मंत्रोच्चार के बीच इस अति प्राचीन मंदिर का करेंगे शिलापूजन

राघोपुर बखरी श्रीरामजानकी मंदिर जीर्णोद्धार कार्य के शिलान्यास समारोह की तैयारी का जायजा लेते सांसद देवेश चंद्र ठाकुर • जागरण

प्रभात खबर
26.04.2026 Sitamarhi

राघोपुर बखरी में भी बनेगा श्रीराम-जानकी का भव्य एवं दिव्य मंदिर

कई राज्यों से आए हुए हैं महामंडलेश्वर

दैनिक भास्कर 26.04.2026 Sitamarhi

जानकी नवमी • सीएम ने पुनौराधाम को बताया विकास का केंद्र, 2028 तक मंदिर निर्माण पूरा होगा

पुनौराधाम मंदिर, मां सीता की प्रतिमा और राम जानकी मठ जीर्णोद्धार से बढ़ेगा धार्मिक महत्व

सीतामढ़ी महोत्सव का उद्घाटन व बखरी मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास

पुनौरा मंदिर में पूजा करते सीएम सम्राट चौधरी।

पुनौरा मंदिर से निकल लोगों का अभिवादन करते सीएम सम्राट चौधरी।

इको-टूरिज्म व धार्मिक सर्किट का होगा विकास

कड़ी सुरक्षा और चाक-चौबंद रही व्यवस्था

हमारी सांस्कृतिक विरासत का गौरव

हिन्दुस्तान 26.04.2026 | Sitamarhi

शिलापूजन

800 वर्ष पुराने राम जानकी मठ का होगा कायाकल्प

राघोपुर बखरी स्थित मठ के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन करते सीएम सम्राट चौधरी।

■ [illegible] कुमार झा

सीतामढ़ी। जानकी नवमी के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने सीतामढ़ी जिले के डुमरा प्रखंड अंतर्गत राघोपुर बखरी स्थित प्राचीन श्रीराम जानकी मठ के जीर्णोद्धार के लिए आयोजित शिला पूजन समारोह में शिरकत की।

रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने 800 वर्ष पुराने मठ के गर्भगृह में दर्शन कर बिहार की समृद्धि और खुशहाली की कामना की। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां 10 हजार एकड़ में भव्य सीतापुरम टाउनशिप विकसित करने का निर्णय लिया गया है, इसे कैबिनेट से स्वीकृति मिल चुकी है। श्रीराम जानकी मठ की 12 एकड़ भूमि पर भी निर्माण कार्य की अनुमति दी गई है। मुख्यमंत्री ने डीएम को निर्देश दिया कि मां सीता से जुड़े सभी स्थलों को चिह्नित कर उन्हें पुनर्जीवित करना सुनिश्चित करें। मंच पर महामंडलेश्वर स्वामी [illegible] जी महाराज, [illegible] जी महाराज, स्वामी [illegible] गिरी जी, स्वामी [illegible] जी, स्वामी [illegible] जी महाराज मौजूद रहे।

दैनिक जागरण 26.04.2026 Sitamarhi

शिलान्यास से 833 वर्ष पुराने मठ के जीर्णोद्धार की जगी आस

सुजित कुमार • जागरण

सीतामढ़ी: सीतामढ़ी महोत्सव के अवसर पर राघोपुर बखरी पहुंचे मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने जब 833 वर्ष पुराने ऐतिहासिक राम-जानकी मठ के जीर्णोद्धार का शिलान्यास किया तो इलाके के लोगों की वर्षों की उम्मीद पूरी होती नजर आई। मुख्यमंत्री निर्धारित समय पर शाम 4:45 बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचे। उनके आगमन पर 'भारत माता की जय' और 'जय-जय श्रीराम' के नारों से वातावरण भक्तिमय हो उठा। मुख्यमंत्री ने भूमि पूजन कर करीब 837 वर्ष पुराने राम-जानकी मठ के जीर्णोद्धार एवं भव्य मंदिर निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मंच पर पहुंचते ही मुख्यमंत्री ने संत-महात्माओं, जनप्रतिनिधियों और श्रद्धालुओं का अभिवादन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जानकी नवमी के पावन अवसर पर मां सीता का आशीर्वाद सभी पर बना रहे। उन्होंने राम-जानकी मठ को सीतामढ़ी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बताते हुए कहा कि इसके जीर्णोद्धार का निर्णय बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद द्वारा लिया गया है। योजना के तहत 12 एकड़ भूमि में भव्य मंदिर का निर्माण किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर देश और बिहार को विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रही हैं। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री सह भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी, सांसद देवेश चंद्र ठाकुर, विधायक सुनील कुमार पिंटू, गायत्री देवी, भाजपा के प्रदेश सह कोषाध्यक्ष आशुतोष शंकर सिंह सहित कई जनप्रतिनिधि और गणमान्य लोग उपस्थित रहे। अंत में मुख्यमंत्री ने 'सियावर रामचंद्र की जय' और 'मां सीता का आशीर्वाद सभी पर बना रहे' के उद्घोष के साथ अपने संबोधन का समापन किया।

पौधा भेंट कर मुख्यमंत्री का किया गया स्वागत

कार्यक्रम में जिलाधिकारी रिची पाण्डेय और तिरहुत रेंज के उप महानिरीक्षक चंदन कुशवाहा ने पौधा भेंट कर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। कार्यक्रम को सीतामढ़ी के सांसद देवेशचंद्र ठाकुर ने भी संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय विधायक सुनील कुमार पिंटू ने किया। इस मौके पर भाजपा सतारूढ़ दल की सचेतक सह परिहार की विधायक गायत्री देवी समेत सभी विधायक, विधान पार्षद व पूर्व विधायक मौजूद रहे।

प्रभात खबर 23.04.2026 Sitamarhi

बखरी में होगा अति प्राचीन श्री रामजानकी मठ का जीर्णोद्धार

प्रचार वाहन को झंडी दिखाते रामायण रिसर्च काउंसिल के सदस्य गण

प्रतिनिधि, रीगा

प्रखंड के बखरी गांव स्थिति अति प्राचीन रामजानकी मठ परिसर से बुधवार को रामायण रिसर्च काउंसिल के सदस्यों ने हरी झंडी दिखाकर प्रचार वाहन को रवाना किया. काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि 25 अप्रैल को जानकी नवमी के अवसर पर इस अति प्राचीन श्री रामजानकी मठ के जीर्णोद्धार को लेकर शीला पूजन समारोह होने जा रहा है. इसके प्रचार-प्रसार को लेकर काउंसिल के सदस्यों ने प्रचार वाहन रवाना किया है. यह प्रचार वाहन सीतामढ़ी, शिवहर समेत आसपास के सभी जिलों में प्रचार करेगा. मौके पर मठ के महंत रामलीला दास, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक मृत्युंजय कुमार, जिला पार्षद नागेंद्र राय, राजेश सिंह, काउंसिल के ट्रस्टी राजीव सिंह, सचिव पीतांबर मिश्र, युवा संयोजक जयराम विप्लव, कुमार स्मृति, ऋतु ठाकुर व प्रणिता ठाकुर समेत अन्य मौजूद थे.

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी ने प्राचीन मठ के जीर्णोद्धार हेतु शिलापूजन किया

दिनांक 25.04.2026 को श्रीजानकी नवमी के पावन अवसर पर सीतामढ़ी में राघोपुर बखरी स्थित 834 वर्ष प्राचीन श्रीरामजानकी मठ के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन-कार्यक्रम संबंधी कुछ दृश्य

हिन्दुस्तान
All Bihar Editiion
22.02.2026

श्रीरामजानकी स्थान का जीर्णोद्धार 25 अप्रैल से

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को सीतामढ़ी में राघोपुर बखरी स्थित अति प्रचीन श्रीरामजानकी स्थान के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन का न्योता देते रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत और सचिव पिताम्बर मिश्र। • हिन्दुस्तान

पटना । सीतामढ़ी में राघोपुर बखरी स्थित अति प्रचीन श्रीरामजानकी स्थान के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन 25 अप्रैल को जानकी-नवमी पर किया जायेगा। इसके लिए रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत एवं सचिव पिताम्बर मिश्र ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से भेंट कर उन्हें आमंत्रण दिया।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में बिहार सरकार के मंत्री-अधिकारी, विभिन्न प्रदेश के संत, विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे बौद्धिक व्यक्तियों और सभी अखाड़ों के आचार्य महामंडलेश्वर को भी आमंत्रित किया जा रहा है। बताया कि सीतामढ़ी में यह प्राचीन-स्थान बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद के अधीन था, जिसे विकसित करने की जिम्मेदारी रामायण रिसर्च काउंसिल को मिली है। बताया कि विश्व हिन्दू परिषद् के पूर्व अध्यक्ष हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. आरएन सिंह को रामायण रिसर्च काउंसिल का ट्रस्टी मनोनीत किया गया है।

प्रभात खबर
All Bihar Editiion
22.02.2026

मुख्यमंत्री को न्योता देते काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत व सचिव पितांबर मिश्र.

सीएम को रामजानकी मंदिर में शिलापूजन के लिए न्योता

सीतामढ़ी

संवाददाता, पटना

सीतामढ़ी में राघोपुर बखरी स्थित अतिप्रचीन श्रीरामजानकी स्थान के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन 25 अप्रैल को जानकी-नवमी के अवसर पर किया जायेगा. इसके लिए काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत एवं सचिव पितांबर मिश्र ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से भेंट कर उन्हें आमंत्रण दिया. सुशांत ने कहा कि इस मठ के जीर्णोद्धार के लिए शिलापूजन-कार्यक्रम में बिहार सरकार के सभी मंत्री, विभिन्न प्रदेश के संतों एवं विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे बौद्धिक व्यक्ति आमंत्रित हैं. साथ ही सभी अखाड़ों के आचार्य महामंडलेश्वर को भी आमंत्रित किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि इस शिलापूजन कार्यक्रम में अयोध्या, काशी और मिथिला के पंडित हिस्सा लेंगे. बाल-वेद-पाठियों के मंत्रोच्चार के साथ इसके शिलापूजन को भव्य बनाया जायेगा. काउंसिल के महासचिव ने कहा कि सीतामढ़ी में मां जानकी के प्राकट्य-स्थल की अपनी विशिष्ट महिमा है. प्राकट्य-स्थल के अलावा कई ऐसे स्थान हैं, जिनको विकसित करने के लिए सरकार पहल कर रही है. उन्होंने कहा कि सीतामढ़ी में यह प्राचीन स्थान भी बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद के ही अधीन था, जिसे विकसित करने की जिम्मेदारी रामायण रिसर्च काउंसिल को मिली है. सुशांत ने कहा कि इस प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार के बाद काउंसिल यहां 51 शक्तिपीठों से मिट्टी एवं ज्योत लाकर एक अखंड ज्योत स्थापित करेगी . चतुर्भुजा महालक्ष्मी की एक प्रतिमा को भी गर्भगृह में स्थापित किया जायेगा.

डॉ आरएन सिंह बने काउंसिल के ट्रस्टी

विश्व हिंदू परिषद के पूर्व अध्यक्ष तथा हड्डी के जाने-माने डॉक्टर डॉ आरएन सिंह को रामायण रिसर्च काउंसिल का ट्रस्टी मनोनीत किया गया है . अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भी डॉ आरएन सिंह मुख्य यजमान की भूमिका में थे . काउंसिल के महासचिव ने बताया कि सीतामढ़ी को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में काउंसिल के संकल्प को पूरा करने के लिए डा सिंह का अनुभव एवं विशेष मार्गदर्शन प्राप्त होगा .

उत्तराखंड में रामायण रिसर्च काउंसिल की मुहिम

हिन्दुस्तान

सीता सखी सम्मान समारोह में तीस महिलाओं का सम्मान

दैनिक जागरण 22.11.2025

सीतामढ़ी को शक्ति स्थल बनाने की ओर बड़ा कदम

होटल किरष्णा रेजीडेंसी में रामायण रिसर्च काउंसिल नई दिल्ली की बैठक में अपने विचार रखते संत व उन्हें सुनते लोग• सहयोगी द्वारा

संवाद सहयोगी, जागरण • वृंदावन: छटीकरा रोड स्थित होटल किरष्णा रेजिडेंसी में रामायण रिसर्च काउंसिल नई दिल्ली की आम बैठक में मां सीताजी के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी को शक्ति स्थल और प्रमुख धार्मिक तीर्थ के रूप में विकसित करने का व्यापक खाका सामने रखा गया। देशभर के 51 शक्तिपीठों से मिट्टी और ज्योत लाकर सीतामढ़ी में शक्तिपुंज स्थापित करने का संकल्प दोहराया गया। काउंसिल के ट्रस्टी व सेवानिवृत्त आइएएस देवदत्त शर्मा ने बताया कि बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद ने लगभग 12 एकड़ भूमि काउंसिल को आवंटित कर दी है, जहां एक विशाल आध्यात्मिक परिसर तैयार होगा।

उन्होंने बताया कि राघोपुर बखरी स्थित श्रीराम जानकी स्थान पर 108 फीट ऊंची हनुमान प्रतिमा, 51 फीट ऊंचे जटायु और 51 फीट ऊंचे धनुष की प्रतिमाएं स्थापित होंगी। यह परिसर न केवल सीतामढ़ी को विश्व स्तरीय धार्मिक पहचान देगा बल्कि सनातन संस्कृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण केंद्र भी बनेगा। बैठक में श्री उमा शक्ति पीठाधीश्वर स्वामी रामदेवानंद सरस्वती, स्वामी गोविंदानंद तीर्थ, महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी आदित्यानंद गिरि, स्वामी सुरेशानंद परमहंस, फूलडोल बिहारीदास, आचार्य हरिहर मुद्गल, स्वामी शिवचेतनानंद, स्वामी कमलेशानंद, स्वामी माधवानंद, आचार्य आशुतोष चैतन्य, डा. लक्ष्मी गौतम सहित प्रमुख संतों ने कहा कि सनातन धर्म के प्राचीन सिद्ध स्थलों का संरक्षण समय की आवश्यकता है। डा. गोपाल चतुर्वेदी ने इस प्रयास को ऐतिहासिक बताया। महामंत्री सुशांत कुमार ने बताया कि संस्था ने पहले भी श्रीराम रामायण मंच से मंदिर तक नामक 1250 पृष्ठों का शोध ग्रंथ तैयार किया है।

NBT नवभारत टाइम्स — Delhi Edition | Date: 16.06.2025

साकार होगा मां सीता के भव्य धाम का सपना, सीतामढ़ी में गूंजेगी भूमि आरती

Roushan.Jha@timesofindia.com

प्राचीन श्रीराम-जानकी मठ का होगा जीर्णोद्धार

कम्युनिटी कनेक्ट

दिनांक 10 जून 2025 को बिहार सरकार (धार्मिक न्यास बोर्ड) द्वारा आवंटित भूमि की घोषणा हेतु नई दिल्ली में आयोजित प्रेस वार्ता एवं देश के विभिन्न अखबारों में कवरेज

हिन्दुस्तान

Date: 11.06.2025

सीतामढ़ी में माता सीता का भव्य मंदिर बनेगा

नई दिल्ली, कार्यालय संवाददाता। कांस्टिट्यूशन क्लब में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वाधान में प्रेसवार्ता आयोजित की गई।

इसमें जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी ने बताया कि काउंसिल को बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद की ओर से मां सीता के मंदिर निर्माण के लिए 12 एकड़ भूमि आवंटित की गई है। मंदिर का भूमि-पूजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों संपन्न होना चाहिए। इसके लिए संत प्रधानमंत्री मोदी से मिलकर निवेदन करेंगे। हालांकि अभी भूमि पूजन की तारीख निर्धारित नहीं की गई है।

नई दिल्ली में मंगलवार को आयोजित प्रेसवार्ता में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद व अन्य।

इस अवसर पर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद ने बताया कि सीतामढ़ी को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने का सपना जल्द ही साकार होने वाला है। परिसर में हनुमान जी की 108 फीट ऊंची मूर्ति का भी निर्माण होगा।

आनंद पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरि महाराज ने कहा कि सभी संत मिलकर मंदिर निर्माण के लिए जन-जन के बीच अभियान चलाएंगे। स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि मां सीताजी का जीवन प्रेरणादायी है। हम केवल मंदिर ही नहीं बनाएंगे, बल्कि मां सीता के जीवन-दर्शन को दुनिया के बीच लेकर जाने वाले हैं। वहीं, निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरि महाराज ने सनातन परिवार से आह्वान किया कि वह रामायण रिसर्च काउंसिल के साथ जुड़ें और मंदिर निर्माण के लिए सहयोग दें। इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ प्रचारक डा. इंद्रेश कुमार, भारत सरकार में पूर्व मंत्री अश्विनी चौबे, पितांबर मिश्र, रौशन सिंह व अन्य मौजूद रहे।

सीतामढ़ी में प्राचीन स्थल पर मां सीताजी के मंदिर निर्माण के लिए बिहार सरकार ने दी 12 एकड़ भूमि

मंदिर के भूमि-पूजन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से निवेदन करेगा संत समाज

नई दिल्ली। [illegible]

[illegible]

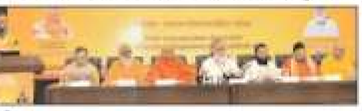

[illegible]

दैनिक जागरण

Date: 11.06.2025

रामलला मंदिर के वास्तुकार आशीष तैयार करेंगे मां सीता मंदिर का माडल

- सीतामढ़ी में बनेगा मां सीता का भव्य मंदिर, बिहार सरकार ने आवंटित की है जमीन
- संतों के मार्गदर्शन में रामायण रिसर्च काउंसिल 12 एकड़ में कराएगी मंदिर का निर्माण

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : रामलला के मंदिर के वास्तुकार आशीष सोमपुरा बिहार के सीतामढ़ी में बनने वाले मां सीता के मंदिर का भी माडल तैयार करेंगे। यह प्राचीन ग्रंथ शिल्प शास्त्र पर आधारित होगा। इसमें इस्पात का उपयोग नहीं होगा। इसी तरह, यह रामलला के वास्तु से अलग होगा, जिसमें मां सीता की तरह ममत्व की झलक होगी। सोमपुरा ने बताया कि मंदिर निर्माण के माडल को लेकर संत समाज से चर्चा आरंभ हो गई है। मंदिर का निर्माण रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से कराया जाएगा। जिसके लिए बिहार सरकार ने 12 एकड़ जमीन उपलब्ध कराई है। यह मंदिर मां सीता के प्राकट्य स्थल पुनौरा से चार किमी की दूरी पर राघोपुर बखरी में बनेगा,

सीतामढ़ी में बनने वाले मां सीता के मंदिर को लेकर जानकारी देते रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत। मंच पर मौजूद संत समाज • जागरण

जहां 833 वर्ष पुराना मठ है। कांस्टीट्यूशन क्लब में पत्रकार वार्ता में जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि, ऋषिकेश स्थित परमार्थ आश्रम के स्वामी चिदानंद सरस्वती, गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज, आनंद अखाड़े के महामंडलेश्वर बालकानंद गिरि, निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर चित्प्रकाशानंद गिरि, संघ के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार मौजूद रहे।

NBT नवभारत टाइम्स

Delhi Edition 12.06.2025

राम मंदिर के आर्किटेक्ट बनाएंगे सीतामढ़ी में भी मंदिर !

संतों ने एक स्वर में की मांग, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही करें भूमि पूजन

■ NBT रिपोर्ट नई दिल्ली

बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद द्वारा 12 एकड़ जमीन आवंटित कर देने के बाद माता सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी में मंदिर निर्माण की प्रक्रिया तेज हो गई है। इसको लेकर मंगलवार को रामायण रिसर्च काउंसिल ने कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में कार्यक्रम का आयोजन किया जहां सभी संतों ने एक-स्वर में कहा कि जानकी मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों ही संपन्न होना चाहिए। जूनापीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि ने कहा कि

रामायण रिसर्च काउंसिल के कार्यक्रम में जुटे देशभर के संत

जिन हाथों से प्रभु श्रीरामलला अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठित हुए हैं, उन्हीं हाथों से मां सीताजी के मंदिर के लिए भूमि-पूजन का काम भी होना चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने जमीन आवंटित करने के लिए बिहार और केंद्र सरकार का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के दौरान श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में मंदिर-निर्माण के आर्किटेक्ट आशीष सोमपुरा ने अयोध्या की तरह सीतामढ़ी में भव्य मंदिर की रूपरेखा के विषय में बताया। इस दौरान सीतामढ़ी के सांसद देवेशचंद्र ठाकुर ने कहा कि उनके लिए गौरव की बात है कि उनके सांसद बनने के बाद बिहार सरकार और केंद्र सरकार सीताजी के प्राकट्य-स्थल पर भव्य मंदिर-निर्माण के लिए प्रयत्न कर रही है। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने कहा कि जल्द ही सीतामढ़ी में भूमि आरती की शुरुआत होगी और यह शुरू होने के बाद प्रतिदिन होगी। कार्यक्रम में आनंद पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरि, निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरि भी मौजूद रहे जबकि जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि और परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। साथ ही संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इन्द्रेश कुमार, भारत सरकार में पूर्व मंत्री अश्विनी चौबे आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला Date: 11.06.2025

सीतामढ़ी के प्राचीन स्थल पर माता जानकी का बनेगा मंदिर

मंदिर निर्माण को लेकर प्रेस वार्ता का किया गया आयोजन। अमर उजाला

संवाद न्यूज एजेंसी

नई दिल्ली। बिहार के सीतामढ़ी में प्राचीन स्थल पर माता सीता का मंदिर बनेगा। मंदिर निर्माण के लिए बिहार सरकार ने 12 एकड़ भूमि दी है। यह जानकारी मंगलवार को रामायण रिसर्च काउंसिल की पहल पर कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में हुई प्रेस वार्ता में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद ने दी।

उन्होंने कहा कि सीतामढ़ी में जिस श्रीरामजानकी स्थान की चर्चा यह कर रहे हैं, वह माता सीता के प्राकट्य-स्थली से चार किलोमीटर दूर है। उन्होंने कहा कि काउंसिल के अंतर्गत सीतामढ़ी को वह तीर्थ-क्षेत्र के रूप में विकसित करने का संकल्प ले रहे हैं। इसके लिए वह भगवान हनुमान की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का भी निर्माण करेंगे। यहां आनंद पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरि, आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इंद्रेश कुमार, पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे, सीतामढ़ी के सांसद देवेशचंद्र ठाकुर भी मौजूद रहे।

जनसत्ता

सीतामढ़ी में 12 एकड़ भूमि में बनेगा मां सीता का मंदिर

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 10 जून।

अयोध्या के राम मंदिर की तर्ज पर माता सीता के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में भव्य व विशाल जानकी मंदिर का निर्माण किया जाएगा। मंदिर निर्माण के लिए 12 एकड़ भूमि आवंटित की गई है। परिसर में हनुमान जी की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का भी निर्माण होगा।

कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वाधान में प्रेसवार्ता आयोजित की गई। इसमें जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी ने बताया कि काउंसिल को बिहार सरकार के अंतर्गत बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद की ओर से मां सीता के मंदिर निर्माण के लिए 12 एकड़ भूमि आवंटित की गई है। मंदिर का भूमि-पूजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों संपन्न होना चाहिए। इसके लिए सभी संत प्रधानमंत्री से मिलकर निवेदन करेंगे। हालांकि अभी तक भूमि पूजन की तारीख निर्धारित नहीं की गई है।

इस अवसर पर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद ने बताया कि मां सीता के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में उनकी भव्य प्रतिमा के निर्माण और पूरे क्षेत्र को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने का सपना जल्द ही साकार होने वाला है।

उन्होंने बताया कि प्राकट्य-स्थल अलग है और सीतामढ़ी में जिस स्थान पर भव्य मंदिर व तीर्थ स्थल बनाने की योजना है, वह स्थल से चार किलोमीटर दूर है।

पंजाब केसरी
— www.PunjabKesari.com —
Date: 11.06.2025

सीतामढ़ी में बनेगा मां सीता का भव्य मंदिर

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित कार्यक्रम में सभी संतों ने एक-स्वर में कहा कि सीतामढ़ी में जानकी मंदिर निर्माण के लिए भूमि-पूजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ही हाथों संपन्न होना चाहिए, और इसके लिए वे सभी प्रधानमंत्री से मिलकर निवेदन करेंगे। जूनापीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि ने कहा कि जिन हाथों से प्रभु श्रीरामलला अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठित हुए हैं, उन्हीं हाथों से सीतामढ़ी में मां सीताजी के मंदिर के लिए भूमि-पूजन का कार्य भी होना चाहिए। इस अवसर पर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने बताया कि मां सीता के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में उनकी भव्य प्रतिमा के निर्माण और पूरे क्षेत्र को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने का सपना जल्द ही साकार होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक निर्माण कार्य के लिए बिहार राज्य धार्मिक न्यास परिषद ने सीतामढ़ी में 12 एकड़ भूमि आवंटित कर दी है, जिसके लिए स्वामी ज्ञानानंद ने बिहार सरकार और केंद्र सरकार का धन्यवाद किया।

NBT नवभारत टाइम्स Delhi Edition | Date: 16.06.2025

साकार होगा मां सीता के भव्य धाम का सपना, सीतामढ़ी में गूंजेगी भूमि आरती

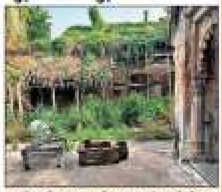

प्राचीन सीताराम-जानकी मठ का होगा जीर्णोद्धार

कम्युनिटी कनेक्ट

नवोदय टाइम्स

माता सीता के मंदिर के लिए बिहार सरकार ने दी 12 एकड़ भूमि

नई दिल्ली, 10 जून (नवोदय टाइम्स): बिहार के सीतामढ़ी में प्राचीन श्रीरामजानकी स्थान पर माता सीता के भव्य मंदिर निर्माण के लिए बिहार सरकार ने 12 एकड़ भूमि आवंटित की है। स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने इसके लिए केंद्र सरकार तथा बिहार सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने प्रेसवार्ता में बताया कि सीतामढ़ी में जिस श्रीरामजानकी स्थान की बात की जा रही वह मां सीता के प्राकट्य स्थली से चार किलोमीटर दूर है।

यहां सीतामढ़ी का प्राचीन मठ है जो बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद के अधीन है, जिसके जीर्णोद्धार के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल लंबे समय से पहल कर रही थी। पर्षद ने इस पर अनुमति दे दी है। सीतामढ़ी में प्राकट्य स्थली के अलावा कई और मठ-मंदिरों का जीर्णोद्धार हो, नव-निर्माण हो, यह बहुत आवश्यक है। श्रीहनुमान का 108 फीट ऊंची प्रतिमा का भी निर्माण किया जाएगा। आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरि महाराज ने कहा कि संत मिलकर सीतामढ़ी में मां सीताजी के मंदिर निर्माण के लिए जन-जन के बीच अभियान चलाएंगे।

जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज ने कहा कि मां सीता के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में जो भी प्रमुख स्थान हैं उनका प्रचार प्रसार होना चाहिए। स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि मां सीता का जीवन प्रेरणादायी है। मां सीता के जीवन-दर्शन को पूरी दुनिया के बीच लेकर जाया जाएगा। निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी चित्रकाशानंद गिरि महाराज ने मंदिर निर्माण के लिए सहयोग की अपील की।

आचार्य रामचंद्र दास महाराज ने कहा कि उनके गुरु पद्मविभूषण जगद्गुरु स्वामी श्रीरामभद्राचार्य महाराज सीतामढ़ी में मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र पुनौरा धाम में मंदिर बनाने के लिए लंबे समय से प्रयासरत रहे। इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी किशोरीशरण, स्वामी जयराम दास महाराज, सीतामढ़ी के सांसद देवेशचंद्र ठाकुर, संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इन्द्रेश कुमार, भारत सरकार में पूर्व मंत्री अश्विनी चौबे, साध्वी अपराजिता गिरि आदि उपस्थित रहे।

संसद भवन में महिला सांसद बहनों के साथ मां सीताजी के मंदिर निर्माण पर चर्चा

07 अगस्त 2023: रामायण रिसर्च काउंसिल की टीम ने संसद भवन में महिला सांसद बहनों के साथ एक बैठक आयोजित की...बैठक में 20 से अधिक महिला सांसद बहनों ने हिस्सा लिया...

आ. श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी जी, मा सांसद, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

आ. श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी, मा. राज्य मंत्री, भारत सरकार

आ. श्रीमती रमा देवी जी, मा. सांसद, शिवहर (बिहार)

आ. श्रीमती रीति पाठक जी, मा. सांसद, सीधी (मध्य प्रदेश)

आ. श्रीमती संध्या राय जी, मा. सांसद, भिण्ड (मध्य प्रदेश)

आ. श्रीमती गीताबेन राठवा जी, मा. सांसद, छोटा उदयपुर (गुजरात)

आ. श्रीमती रंजिता कोली जी, मा. सांसद, भरतपुर (राजस्थान)

आ. श्रीमती क्वीन ओझा जी, मा. सांसद, गुवाहाटी (असम)

आ. श्रीमती माला राज्य लक्ष्मी शाह जी, मा. सांसद, टिहरी-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

आ. श्रीमती गोमती साय जी, मा. सांसद, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

आ. राजकुमारी दिया कुमारी जी मा. सांसद, राजसमंद (राजस्थान)

आ. श्रीमती संघमित्रा मौर्या जी, मा. सांसद, बदायूं (उत्तर प्रदेश)

आ. श्रीमती देबाश्री चौधरी जी, मा. सांसद, रायगंज (पश्चिम बंगाल)

आ. श्रीमती केशरी देवी पटेल जी, मा. सांसद, फूलपुर (उत्तर प्रदेश)

संसद भवन में आयोजित बैठक

अमर उजाला

Maa Sita Statue: माता सीता की प्रतिमा की स्थापना के लिए आगे आएंगी महिला सांसद; संसद भवन में हुई अहम बैठक

न्यूज डेस्क, अमर उजाला, नई दिल्ली Published by: Updated Tue, 08 Aug 2023 10:08 PM IST

सार

Maa Sita Statue: रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में सीतामढ़ी में मां सीता की 251 फीट ऊंची प्रतिमा और संबंधित क्षेत्र को शक्ति, पर्यटन एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने की पहल की जा रही है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में सीतामढ़ी में मां सीता की 251 फीट ऊंची प्रतिमा और संबंधित क्षेत्र को शक्ति, पर्यटन एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने की पहल की जा रही है। इस विषय पर मंगलवार को संसद भवन में एक बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता भारत सरकार में रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट ने की।

epaper हिन्दुस्तान

हल्द्वानी, बुधवार, 9 अगस्त 2023 11

रामायण रिसर्च काउंसिल की बैठक में माता सीता की प्रतिमा लगाने पर मंथन

नई दिल्ली,विशेष संवाददाता । रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में सीतामढ़ी में माता सीता की 251 फीट ऊंची प्रतिमा लगाने तथा संबंधित क्षेत्र को शक्ति, पर्यटन एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने की पहल की जा रही है। इस विषय पर मंगलवार को संसद भवन में एक बैठक आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता भारत सरकार में रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट ने की। इस बैठक में विभिन्न राज्यों से आई कई महिला सांसदों ने हिस्सा लिया तथा उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस दौरान महिला सांसदों ने काउंसिल के इस प्रयास की सराहना की तथा आश्वस्त किया कि जहां भी उनकी आवश्यकता होगी, वह बढ़-चढ़कर इस कार्य में हिस्सा लेंगी और माता सीताजी की भी प्रतिमा की स्थापना की दिशा में हरसंभव प्रयास करेंगी।

बैठक में प्रयागराज से सांसद रीता बहुगुणा जोशी, सीधी से सांसद रीति पाठक, केंद्रीय राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, शिवहर से सांसद रमा देवी, भिण्ड से सांसद संध्या राय, छोटा उदयपुर से सांसद गीताबेन राठवा, भरतपुर से सांसद रंजीता कोली, गुवाहाटी से सांसद क्वीन ओझा, टिहरी गढ़वाल से सांसद माला राज्य लक्ष्मी शाह, रायगढ़ से सांसद गोमती साय, राजसमंद से सांसद राजकुमारी दिया कुमारी, बदायूं से सांसद संघमित्रा मौर्य, रायगंज से देबोश्री चौधुरी, फूलपुर प्रयागराज से सांसद केशरी देवी समेत कई महिला सांसदों ने हिस्सा लिया।

06 अगस्त 2023: रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में नई दिल्ली स्थित संस्कार भारती में बैठक की अध्यक्षता करते काउंसिल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री कामेश्वर चौपाल जी (श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अध्यक्ष)

दिनांक: 15.10.2023:

सीतामढ़ी में मां सीताजी की भव्य प्रतिमा के लिए अब विश्व हिन्दू परिषद करेगी सहयोग

- परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने रामायण रिसर्च काउंसिल को समर्थन की घोषणा की।
- सीतामढ़ी में प्रेस वार्ता आयोजित कर की घोषणा
- कहा, जिस रूप में आवश्यकता होगी, उस रूप में अब विश्व हिंदू परिषद देगी काउंसिल को सहयोग।

दैनिक जागरण 16.10.2023

सीतामढ़ी में मां सीता की भव्य प्रतिमा निर्माण में विहिप करेगा सहयोग

सीतामढ़ी में प्रेसवार्ता करते विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार व श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के ट्रस्टी कामेश्वर चौपाल व अन्य। • जागरण

सीतामढ़ी, संवाद सहयोगी : विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि विहिप सीता जन्मभूमि के विकास का समर्थन करती है। अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर बन गया है। जिस प्रकार श्री राम जन्मभूमि को मंदिर और विकास होगा, उसी तरह सीता जन्मभूमि का भी विकास होगा। रामायण रिसर्च कौंसिल ने सीता जन्मभूमि पर विश्व की सबसे ऊंची 251 फीट की प्रतिमा की स्थापना तथा संबंधित क्षेत्र को तीर्थ एवं पर्यटन के रूप में विकसित करने की पहल की है। विहिप इस कार्य में पूरा सहयोग करेगी। वे रविवार को शहर के श्रीराधा कृष्ण मंदिर में पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आगामी 22 जनवरी को रामलला अपने घर में विराजमान होंगे। यह दुनिया में इस सदी का सबसे बड़ा उत्सव और आनंद का क्षण होगा। यह उत्सव केवल अयोध्या में ही नहीं, बल्कि देश दुनिया के सभी मंदिरों में मनाया जाएगा। जिस तरह 14 वर्षों के वनवास के बाद जब प्रभु श्री राम अयोध्या पहुंचे तो अयोध्यावासियों ने उत्सव और दिवाली मनाई, उसी तरह 500 वर्ष बाद श्रीराम के गृह प्रवेश के अवसर पर उत्सव मनाया जाएगा। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के ट्रस्टी तथा रामायण रिसर्च कौंसिल के सदस्य कामेश्वर चौपाल ने कहा कि 51 शक्तिपीठों से मिट्टी व ज्योत लाकर मां सीता को उसी रूप में यहां स्थापित किया जाना है, जिस रूप में मां 51 शक्तिपीठों में विराजमान हैं।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com पटना सोमवार 16 अक्तूबर 2023

माता सीता की प्रतिमा निर्माण में करेंगे सहयोग

विहिप का एलान

रविवार को सीतामढ़ी में संवाददाता सम्मेलन में विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष व अन्य।

सीतामढ़ी। सीतामढ़ी में माता सीता की भव्य प्रतिमा का निर्माण करने के लिए विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) सहयोग करेगा। रविवार को डुमरा स्थित राधा कृष्ण मंदिर में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में आयोजित प्रेस वार्ता में विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने यह घोषणा की।

उन्होंने कहा कि काउंसिल के अंतर्गत सीतामढ़ी में मां सीताजी की 251 फीट ऊंची प्रतिमा तथा संबंधित क्षेत्र को शक्ति, पर्यटन एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। विहिप इस कार्य में सहयोग करेगा। अयोध्या में राम मंदिर की तर्ज पर सीतामढ़ी में भी काउंसिल के अंतर्गत माता सीताजी की भव्य प्रतिमा के निर्माण-कार्य को जल्द शुरू कराया जाएगा। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के ट्रस्टी तथा रामायण रिसर्च काउंसिल के अध्यक्ष कामेश्वर चौपाल ने कहा कि यहां न केवल भव्य प्रतिमा बनेगी, बल्कि 51 शक्तिपीठों से मिट्टी एवं ज्योत लाकर मां सीताजी को उसी रूप में स्थापित किया जाएगा जिस रूप में 51 शक्तिपीठों में विराजमान हैं। मां सीताजी को पहली बार यहां भगवती के रूप में स्थापित कर सीतामढ़ी क्षेत्र को शक्ति-स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा।

प्रभात खबर prabhatkhabar.com मुजफ्फरपुर, सोमवार 16.10.2023 03

मां सीता की 251 फुट ऊंची प्रतिमा और जन्मभूमि के विकास का समर्थन करेगी विहिप : आलोक

29 अप्रैल 2023 को जानकी नवमी के अवसर से ठीक पहले
27 अप्रैल को नई दिल्ली स्थित कंस्टीट्यूशन क्लब में
'श्रीभगवती सीता- महाशक्ति साधना'
पुस्तक का लोकार्पण कार्यक्रम
में अतिथिगण...

पटना (बिहार) स्थित विद्यापति भवन में
दिनांक 15.07.2023 को आयोजित कार्यक्रम

काउंसिल के तत्वावधान में श्रीभगवती सीता मंदिर निर्माण जगजागरण अभियान समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में माता सीताजी के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी में मां सीताजी की भव्य प्रतिमा और दिव्य मंदिर बनाने का संकल्प लिया गया।

बैठक की अध्यक्षता बिहार के जाने माने हड्डी रोग विशेषज्ञ तथा विश्व हिन्दू परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. आर.एन. सिंह जी ने की। इस मौके पर प्रतिष्ठित संत एवं रामायण रिसर्च काउंसिल के मार्गदर्शक पूज्य परमहंस स्वामी आगमानंद जी महाराज जी, सेवानिवृत्त जज श्रीमान समरेंद्र प्रताप सिंह जी, सेवानिवृत्त आईपीएस श्रीमान अरविंद कुमार ठाकुर जी, सेवानिवृत्त आईएएस श्रीमान उदय कुमार सिंह जी, शिक्षाविद् डॉ. विश्वनाथ झा जी, आरएसएस के क्षेत्रीय कार्यवाह डॉ. मोहन सिंह जी, चेतना समिति के सचिव श्रीमान उमेश मिश्र जी, सेवानिवृत्त डीआईजी (रेलवे) श्रीमान ओम प्रकाश गुप्ता जी, भाजपा ओबीसी मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बहन अर्चना राय भट्ट जी, जानकी सेना के मुख्य संरक्षक श्रीमान मृत्युंजय झा जी, श्रीदशहरा कमेटी ट्रस्ट (पटना) के अध्यक्ष श्रीमान अरुण जी, बहन डॉ. सुमन लाल जी, बहन शिवानी जी, श्रीमान आशुतोष सिंह जी आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए इसे एक विश्वव्यापी अभियान बनाने का संकल्प लिया।

हिन्दुस्तान 16.07.2023 Patna Edition

माता सीता की भव्य प्रतिमा बनेगी

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। सीतामढ़ी में माता सीता की भव्य प्रतिमा का निर्माण होगा। शनिवार को विद्यापति भवन में रामायण रिसर्च काउंसिल की हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक की अध्यक्षता विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष डॉ. आरएन सिंह ने की।

इस अवसर पर काउंसिल के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय उपाध्यक्ष तथा श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के ट्रस्टी कामेश्वर चौपाल को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बैठक में चौपाल ने कहा कि मां सीता के उद्भव और आदर्शों के बारे में तथा यह मंदिर क्यों आवश्यक है, इस विषय को पूरे देश को बताना है। इसके लिए काउंसिल के तत्वावधान में 'श्रीभगवती सीता मंदिर निर्माण जगजागरण अभियान समिति' गठित की गई है। इसके माध्यम से हर प्रदेश में बैठक आयोजित कर लोगों को जागरूक किया जाएगा। इसकी शुरुआत बिहार से हो गई है। मौके पर संत परमहंस स्वामी आगमानंद जी महाराज, सेवानिवृत्त जज समरेंद्र प्रताप सिंह, अरविंद कुमार ठाकुर, उदय कुमार सिंह, डॉ. विश्वनाथ झा, डॉ. मोहन सिंह, उमेश मिश्र, ओम प्रकाश गुप्ता, अर्चना राय भट्ट, मृत्युंजय झा, अरुण जी, डॉ. सुमन लाल, शिवानी जी, आशुतोष सिंह आदि ने अपने विचार रखे। चंद्रशेखर मिश्र, राजीव सिंह, अवधेश सिंह मौजूद रहे।

कामेश्वर चौपाल को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत होने पर सम्मानित करते पदाधिकारी।

जागरण 16.07.2023 Patna Edition

कामेश्वर चौपाल बनाए गए रामायण रिसर्च काउंसिल के राष्ट्रीय अध्यक्ष

जागरण संवाददाता, पटना : सीतामढ़ी में मां सीता की भव्य प्रतिमा स्थापित करने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल की बैठक शनिवार को विद्यापति भवन में विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय अध्यक्ष डा. आरएन सिंह ने की अध्यक्षता में हुई। काउंसिल के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के ट्रस्टी कामेश्वर चौपाल को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया। कामेश्वर चौपाल ने कहा कि मां सीताजी के उद्भव और आदर्शों का प्रकाश पूरे देश में फैलाने के लिए 'श्रीभगवती सीता मंदिर निर्माण जगजागरण अभियान समिति' गठित की गई है, जिसके माध्यम से हर प्रदेश में बैठक आयोजित कर लोगों को जागरूक किया जाएगा। इसकी शुरुआत बिहार की धरती से हो गई है।

प्रभात खबर 5/18

24.11.2022

माता सीता की प्रतिमा स्थापित करने में आइआइटी देगा मदद

संवाददाता, पटना

रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से मां सीताजी की विशाल प्रतिमा स्थापित करने में आइआइटी, पटना तकनीकी सहयोग करेगा. माता सीता के 251 फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित की जा रही है. रामायण रिसर्च काउंसिल ने आग्रह पत्र भेजा है. इस विषय में संस्थान के निदेशक प्रो टीएन सिंह ने कहा कि यह पूरे राष्ट्र के लिए गौरव का विषय है. एक तरफ इससे जहां देश की नारी सशक्तिकरण को बड़ा बल मिलेगा, तो वहीं, प्रदेश में पर्यटन के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास होगा. रोजगार के नये आयाम भी खुलेंगे. काउंसिल की ओर से एक टीम ने प्रो टीएन सिंह से मिलकर तकनीकी सहयोग की अपील की थी, जिसे संस्थान ने हर संभव मदद का आश्वासन दिया है. टीम में जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी विरेंद्रानंद जी महाराज, जगादाचार्य आश्रम के महंत स्वामी आराध्या सरस्वती जी महाराज, काउंसिल के अध्यक्ष चंद्रशेखर मिश्र, उपाध्यक्ष जयकांत सिंह, महासचिव कुमार सुशांत, सचिव पितांबर मिश्र के साथ अन्य सदस्य शामिल थे. इस विशाल प्रतिमा के चारों तरफ वृत्ताकार रूप से 108 ऐसी प्रतिमाओं का भी निर्माण होना है, जिनसे माताजी के जीवन दर्शन का उल्लेख हो सकें. साथ ही इस स्थल को शक्ति स्थल के रूप में विकसित करने के लिए 51 शक्तिपीठों से मिट्टी व जल लाकर तथा मध्य प्रदेश में नलखेड़ा स्थित मां बगलामुखी सिद्ध पीठ आश्रम से ज्योत लाकर इस स्थान को शक्ति स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा. इसके अलावा देश का सबसे पहला सांस्कृतिक दूतावास भवन भी वहीं स्थापित होना है. इस कार्य में समय-समय पर आइआइटी पटना द्वारा तकनीकी सहयोग मिलेगा. निर्माण प्रक्रिया पूर्ण होने तक सहयोग जारी करेगा.

हिन्दुस्तान

05.04.2022

प्रधानमंत्री से मिलकर प्रतिमा स्थापना की दी जानकारी

प्रधानमंत्री से मिलकर समस्या से अवगत कराते सांसद सुनील कुमार पिंटू।

सीतामढ़ी, कार्यालय संवाददाता। जिले में माता सीताजी की 251 मीटर की प्रतिमा स्थापना की जानकारी मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलकर सांसद सुनील कुमार पिंटू ने दी। सासंद ने बताया कि प्रधानमंत्री जी ने सभी विषयों को ध्यान से सुना और अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने इस पवित्र कार्य की सराहना करते हुए कहा कि माताजी की इच्छा और अनुमति से ही ऐसे कार्य शुरू होते हैं और कार्यान्वित किए जाते हैं। प्रधानमंत्री जी ने आश्वस्त करते हुए कहा कि जहां भी आवश्यकता होगी, उनकी ओर से हरसंभव मदद की जाएगी। उन्होंने इसके बेहतर कार्यान्वियन के लिए उचित मार्गदर्शन भी दिया।

आरओबी निर्माण को लेकर रेलमंत्री से मिल सांसद

सीतामढ़ी। शहर स्थित महेसौल आरओबी निर्माण सहित अन्य समस्या को लेकर सांसद सुनील कुमार पिंटू रेल मंत्री से मुलाकात की। उन्होंने आरओबी निर्माण कार्य प्रारंभ करने की तिथि सुनिश्चित करने, सीतामढ़ी स्टेशन के चौमुखी विकास व रेलवे के पर्यटन के मानचित्र पर सीतामढ़ी स्टेशन को दर्शाने, विभिन्न हिस्सों को सीतामढ़ी से रेलमार्ग से जोड़ने आदि की मांग की। सासंद ने बताया कि रुन्नीसैदपुर स्टेशन पर इंटरसिटी का ठहराव की भी मांग की गयी। जिसपर रेल मंत्री ने तुरंत फोन पर बात कर आदेश दिया। साथ ही अन्य मांगों को लेकर सकारात्मक आश्वासन दिया।

दैनिक जागरण

28.04.2023 Delhi Edition

'सीतामढ़ी को सांस्कृतिक स्थल के रूप में विकसित करने की योजना सराहनीय'

[illegible]

राष्ट्रीय सहारा

28.04.2023 Delhi Edition

इंसान को मां व मातृभूमि के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए : डॉ. इंद्रेश कुमार

- सीतामढ़ी को सांस्कृतिक स्थल के रूप में विकसित करने की योजना सराहनीय
- सीतामढ़ी के पुनौरा धाम में बनेगी मां सीता की 251 फीट ऊंची भव्य प्रतिमा

नई दिल्ली (एसएनबी)। आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि इंसान को अपनी मां और मातृभूमि के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए, क्योंकि मां हमें संस्कार देती है और मातृभूमि हमें गौरव की अनुभूति कराती है। रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से बृहस्पतिवार को कांस्टीट्यूशन क्लब में मां सीता पर केंद्रित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने यह बात कही। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि काउंसिल के तत्वावधान में बिहार के सीतामढ़ी में मां सीता की 251 [illegible] सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। केंद्रीय पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर

चित्र में रामायण रिसर्च काउंसिल की सतत बैठक

सीतामढ़ी में राघोपुर बखरी स्थित 834 वर्ष प्राचीन श्रीरामजानकी स्थान मंदिर की वर्तमान स्थिति।

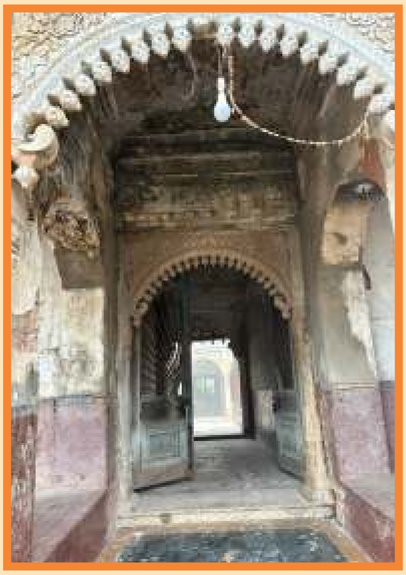

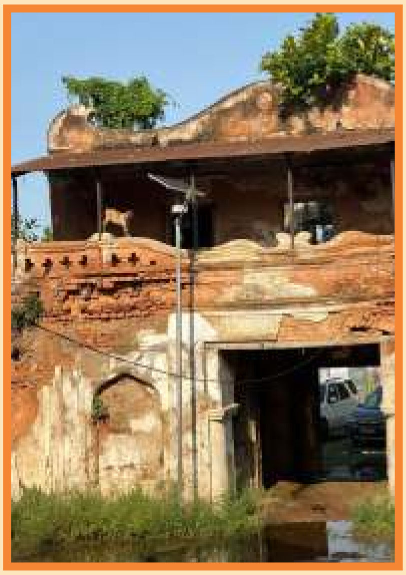

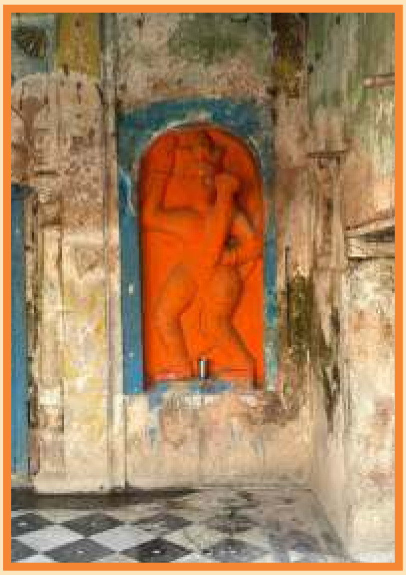

वृंदावन में रामायण वार्ता काउंसिल की तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला का आयोजन।

दैनिक जागरण 20.09.2025

पेंटिंग पर अपनी सोच उकेरता है कलाकार : प्रो. बघेल

संवाद सहयोगी, जागरण • वृंदावन: केंद्रीय पशुधन, लघु सिंचाई एवं मत्स्य पालन मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल ने कहा पेंटिंग में जब भी कलाकार कोई कलाकृति उकेरता है, तो वह अपनी सोच को उकेरता है। वृंदावन में देशभर के कलाकार ब्रज की संस्कृति को कैनवास पर उकेर रहे हैं, ये उनके अंदर ब्रज संस्कृति के दर्शन का प्रतीक है।

छटीकरा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भवन में रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित पेंटिंग कार्यशाला का शुक्रवार को शुभारंभ संत गोविंदानंद तीर्थ एवं पद्मश्री कृष्णा चित्रकार ने दीप प्रज्वलन कर किया। काउंसिल ट्रस्टी सेवानिवृत्त आइएएस देवदत्त शर्मा ने कहा पेंटिंग ब्रज संस्कृति पर आधारित रखी गई है। देश भर के

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में पेंटिंग देखते केंद्रीय मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल साथ में काउंसिल के ट्रस्टी एवं सेवानिवृत्त आइएएस देवदत्त शर्मा • स्वयं द्वारा

55 नामचीन कलाकार अपनी प्रतिभा का अद्भुत प्रदर्शन करने को कार्यशाला में पहुंचे हैं। पद्मश्री कृष्णा कन्हाई ने कहा पेंटिंग एक साधना है। इसके लिए कलाकार का जीवन गुजर जाता है। लेकिन, उसे पूर्णता नहीं मिलती। संत गोविंदानंद तीर्थ ने कहा कलाकार जिस भावना के साथ ब्रज की संस्कृति को कैनवास पर उकेर रहे हैं।

कैनवास पर ब्रज के प्रति अपनी भावना उकेर रहे कलाकार

ब्रज की संस्कृति से लेकर प्रकृति को कलाकार उतार रहे कैनवास पर

संवाद सहयोगी, जागरण • वृंदावन: पेंटिंग कार्यशाला में दिग्गज कलाकार कैनवास पर अपनी भावनाओं को उकेर रहे हैं। ब्रज संस्कृति से लेकर प्रकृति को समेटे अपनी भावनाओं को जिस तरह कलाकार पेंटिंग में उतार रहे हैं, दर्शक देखकर मुग्ध हो रहे हैं। देशभर से आए कलाकार अपने मन में बसकर ब्रज को कैनवास पर उकेर रहे हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला में देश के चौदह राज्यों के 55 चित्रकार अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। शनिवार को कार्यशाला में देशभर के कलाकारों की जब पेंटिंग देखी तो इसमें ब्रज संस्कृति को समेटे उनकी भावनाएं दिखाई दे रही थीं।

वृंदावन के श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित पेंटिंग कार्यशाला में कैनवास पर आकृति उकेरती कलाकार • जागरण

कहीं श्रीराधाजी प्रकृति को संजोए पेंटिंग में दिखाई दे रही थीं, तो कहीं दुनियाभर में फैली अराजकता को शांति का संदेश देने वाली पेंटिंग दर्शकों को बड़ा संदेश देने का काम कर रही है। कोई चित्रकार महिलाओं के अधिकार से लेकर उनकी लक्ष्मण रेखा तक अपनी पेंटिंग में उकेर रहा है तो कहीं राधाजी व ब्रज की पुण्य प्रकृति को कैनवास पर उकेरा गया है।

वृंदावन का नाम सुनते ही मन में जो आस्था उमड़ती है, वह मन को भाती है। वृंदावन में पक्षियों की चहचहाट, पर्यावरण का वर्णन मैं सब अपनी पेंटिंग में समेट रही हूं। श्रीराधारानी के साथ प्रकृति का वर्णन करवा रही हूं। यहां के संगीत को प्रकृति से जोड़कर अपनी पेंटिंग में दिखाने की कोशिश कर रही हूं।

रिमी पोद्दार, गोवा

मैं अपनी पेंटिंग में आध्यात्म से जोड़कर एक संदेश दुनिया को देना चाहती हूं। जब हम अपनी देहरी पार करते हैं तो आने वाले संकटों को भांपने की कोशिश का संदेश दे रही हूं। मैंने अपनी पेंटिंग में सीताजी द्वारा साधु भेष में आए रावण को भिक्षा देने का दृश्य प्रस्तुत कर रही हूं।

-शुभप्रकाश वैद्य, इंदौर।

कृष्ण की नगरी में हम आध्यात्म का संदेश तो सभी देते हैं। लेकिन, मैंने कुछ हटकर काम किया है। माडर्न आर्ट में मैं दुनिया को अराजकता से दूर होकर शांति का संदेश देना चाहता हूं। दुनिया में जो युद्ध चल रहे हैं, उससे निकलकर बड़े देशों को अपना अहम छोड़कर शांति का रास्ता अपनाने का संदेश मैं अपनी पेंटिंग में देने की कोशिश कर रहा हूं।

-जगदीश पांडे, नैनीताल।

वृंदावन आकर मैंने यहां का परिचय जाना। मुझे गोपीश्वर महादेव मंदिर की जानकारी हुई और पूरा इतिहास जाना। इसके बाद मैंने भगवान गोपेश्वर पर आधारित पेंटिंग बनाई है। मैंने भगवान भोलेनाथ को गोपीरूप में दर्शाने की कोशिश की है।

-तमा शर्मा, गाजियाबाद।

जागरण 21.08.2025

16 मई 2024: रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में सीता नवमी के शुभ उपलक्ष्य पर आयोजित 'सीता-संवाद' कार्यक्रम। इस अवसर पर आवाहन पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी अरुण गिरी जी महाराज, निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरी जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी भैया जी महाराज, जैन संत लोकेश मुनि जी, आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक आ. इंद्रेश कुमार जी, विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष डॉ. आलोक कुमार जी, भारत सरकार में पूर्व राज्य मंत्री श्री अश्विनी चौबे जी, भाजपा नेता श्री विजय जौली जी, विश्व हिन्दू परिषद के श्री जय भगवान गोयल जी, इलाहाबाद हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त जज जस्टिस सुधीर अग्रवाल जी, राष्ट्रीय कवि संगम के अध्यक्ष जगदीश मित्त जी, आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक तथा काउंसिल के ऑर्गेनाइजिंग ट्रस्टी लक्ष्मीनारायण भाला जी समेत कई आध्यात्मिक गुरु, महामण्डलेश्वर, प्रबुद्ध संत, संघ प्रचारक, विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष समेत कई गणमान्य उपस्थित रहे।

22 जनवरी 2024 को अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर मां सीताजी के प्राकट्य क्षेत्र सीतामढ़ी (बिहार) में आयोजित कार्यक्रम

हिन्दुस्तान Sitamarhi Edition 23.01.2024

जानकी मंदिर में अयोध्या के कार्यक्रम का हुआ प्रसारण

सीतामढ़ी, सीतामढ़ी प्रतिनिधि। अयोध्या में भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। काउंसिल के बैनर तले जानकी मंदिर में सोमवार को अयोध्या के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया।

राघोपुर बखरी स्थित श्रीराम-जानकी मंदिर में अखंड रामायण पाठ एवं 24 घंटा श्रीरामनाम जाप धुन का मंत्रोचार किया।

जानकी मंदिर में श्री भगवती सीता तीर्थ समिति के अध्यक्ष व स्थानीय सांसद सुनील कुमार पिंटू ने बड़ा स्क्रीन लगवाकर लाइव प्रसारण आरंभ करवाया। सांसद ने कहा कि भगवान श्रीराम हमसबों के जीवन के लिए आदर्श हैं। हम सभी के लिए गर्व की बात है कि रामलला आज अयोध्या में विराजमान हुए हैं। अंत में श्रीराम-नाम धुन का आयोजन किया गया।

दैनिक जागरण Sitamarhi Edition 23.01.2024

रामायण रिसर्च काउंसिल ने किया लाइव प्रसारण

संवाद सहयोगी, सीतामढ़ी: अयोध्या में भगवान श्रीरामलला के प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम पर रामायण रिसर्च काउंसिल ने सीतामढ़ी में भव्य आयोजन किया। काउंसिल ने अति प्राचीन राघोपुर बखरी स्थित श्रीराम-जानकी मंदिर में अखण्ड रामायण पाठ प्रारंभ कराया तथा चौबीस घंटे के लिए श्रीरामनाम धुन की शुरुआत हुई। इस दौरान हवन-पूजन भी किया गया। श्रीभगवती सीता तीर्थ क्षेत्र समिति के अध्यक्ष तथा सीतामढ़ी से सांसद सुनील कुमार पिंटू ने कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। इस दौरान अयोध्या में भगवान श्रीरामलला के प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम को यहां मंदिर में एक बड़ा स्क्रीन लगाकर लाइव प्रसारित भी किया गया। इस दौरान सांसद पिंटू ने कहा कि भगवान श्रीराम हमारे जीवन के लिए आदर्श हैं और आज हम सनातन-प्रेमियों के लिए गर्व की बात है कि श्रीरामलला आज अयोध्या में विराजित हुए हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज पूरे सनातन को उन पर गौरव है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के हाथों भगवान को यह पूजन संपन्न कराना था, इसके लिए प्रधानमंत्री भाग्यशाली भी हैं।

जानकी मंदिर में दर्शन पूजन करते सांसद सुनील कुमार पिंटू • जागरण

21 दिसंबर 2022

को नई दिल्ली के कंस्टीट्यूशन क्लब में काउंसिल के तत्वावधान में आयोजित

कार्यक्रम

29 मार्च 2023 को प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण (अयोध्या) में लगे आर्किटेक्ट श्री आशीष सोमपुरा जी, पटना आई.आई.टी. की टीम के साथ, सीतामढ़ी में सम्बंधित स्थल पर पहुँचे। नेतृत्व करते काउंसिल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री कामेश्वर चौपाल जी (श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अध्यक्ष)

दैनिक जागरण 30.03.2023 Sitamarhi Edition

प्रतिमा की स्थापना को लेकर कवायद तेज

दिनांक: 10.10.2023:

मधुबनी स्थित चंद्रा कॉम्प्लेक्स में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में श्रीभगवती सीता मंदिर निर्माण जनजागरण अभियान समिति की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के सदस्य तथा रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी   कामेश्वर चौपाल, महामंडलेश्वर पचाढी महंत मौनी बाबा, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रो. शशिनाथ झा समेत कई प्रबुद्धजनों ने हिस्सा लिया। कद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे ने भी अपना वीडियो संदेश भेजकर अधिक से अधिक लोगों से इस विषय से जुड़ने का आह्वान किया।

कोटा (राजस्थान) में दिनांक 18 जून 2023 को आयोजित कार्यक्रम

कोटा (राजस्थान) में 18 जून 2023 को कार्यक्रम। इस अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला जी, कोटा दक्षिण से विधायक संदीप शर्मा जी, ब्रह्म कुमारीज से उर्मिला दीदी, गोदावरी धाम के महंत पूज्य शैलेंद्र भार्गव जी समेत दर्जनों चिकित्सक, व्यापारी वर्ग, शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. विपिन योगी जी रहे, परिचर्चा का संचालन योगी राज योगी जी ने किया, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुनीता योगी जी ने दिया।

चम्बल संदेश 19.06.2023

सीता माता मंदिर के निर्माण को लेकर कोटा में परिचर्चा आयोजित

संदेश न्यूज। कोटा.

एक तरफ अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हो रहा है तो वहीं सीतामढ़ी में माता सीताजी के भव्य मंदिर निर्माण की पहल की जा रही है। इसी विषय पर रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में श्रीनाथपुरम स्थित जननी हॉस्पिटल परिसर में एक परिचर्चा आयोजित की गई। इस अवसर पर चिकित्सा, धार्मिक, सामाजिक, व्यापारी, उद्योग, शिक्षा जगत समेत विभिन्न वर्ग के लोगों के साथ कई मंदिरों

के पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ.विपिन योगी ने कहा कि माता सीता की महिमा को पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार करने की पहल की जा रही है। इस मौके पर रेड क्रॉस सोसाइटी के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर की स्थापना के साथ अब माता सीताजी के भव्य मंदिर स्थापना की पहल की जा रही है। वहीं कोटा दक्षिण से विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि हम रामराज्य की स्थापना की ओर दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। ब्रह्माकुमारी उर्मिला दीदी ने कहा कि यह मातृ-शक्ति को लेकर माता सीताजी के जीवन से प्रेरणा लेने जैसे अभियान को शुरू करने का भी प्रयास करेंगी। गोदावरी धाम के महंत शैलेंद्र भार्गव ने कहा कि सीताजी के बिना रामजी अधूरे हैं और हर्ष का विषय है कि काउंसिल द्वारा माता सीताजी के मंदिर के लिए तेज गति से कार्य जारी है।

इस अवसर पर जीडी पटेल, भाजपा जिलाध्यक्ष रामबाबू सोनी, भाजपा जिला महामंत्री जगदीश जिंदल, चंद्रशेखर नरवाल, रितेश चित्तौड़ा, मोती लाल मीणा, अखिल भारतीय साहित्य परिषद से रामू भैया, विष्णु शर्मा, आरोग्य भारती के प्रांत संयोजक नित्यानंद, आईएमए के नेशनल वाइस प्रेसिडेंट डॉ. अशोक शारदा, वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. शोभा मिश्रा, नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन के जिला संयोजक डॉ. प्रद्युम्न गोयल, अशोक बादल, विकास शर्मा, डॉ.अनिल शर्मा समेत कई गणमान्य मौजूद रहे। परिचर्चा का संचालन योगी राज योगी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुनीता योगी ने किया।

आर्किटेक्ट की ओर से प्रथम दृष्टया काउंसिल को प्रस्तुत प्रस्तावित मंदिर की रूपरेखा।

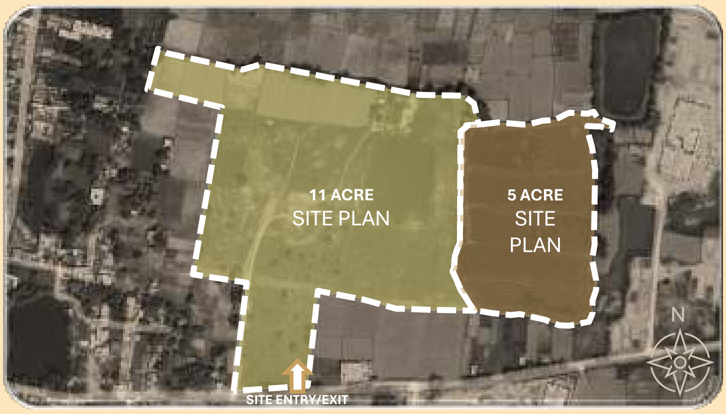

EXISTING SITE IMAGES

PROPOSED SITE PLAN

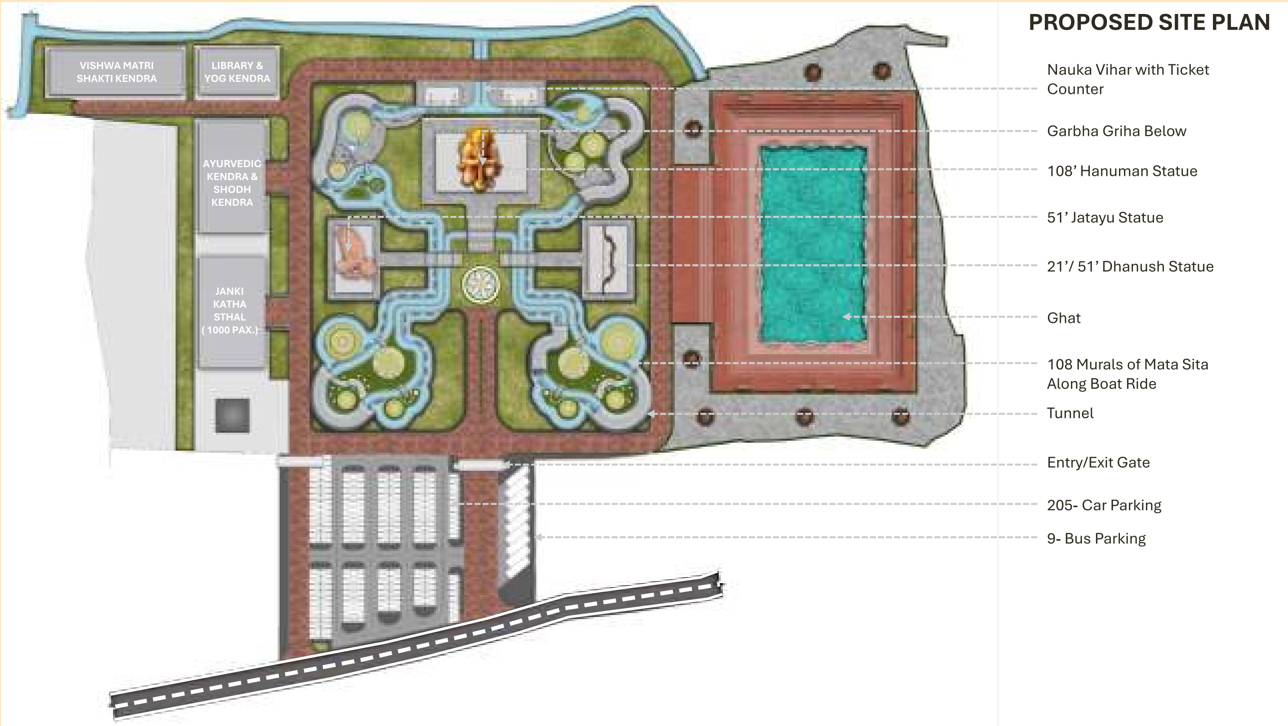

रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा साहित्य-सृजन की दिशा में सबसे पहले अयोध्या में श्रीरामलला के मंदिर संघर्ष पर ग्रंथ संबंधी विषय को जानिए जिसे काउंसिल ने हिंदी भाषा में पूर्ण कर लिया है। अंग्रेजी भाषा में कार्य जारी है।

प्रभु श्रीराम मंदिर के लिए 500 वर्षों के संघर्ष तथा भगवान के मानव-कल्याण संदेशों पर आधारित ग्रंथ

श्रीरामलला : मन से मंदिर तक

पहली बार एक विषय अयोध्या और प्रभु श्रीरामजी पर किसी एक संकलित विषय में 250 से अधिक लेखकों के विचार संकलित किए गए हैं। अयोध्या के सांस्कृतिक,ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी, आध्यात्मिक, विकास से संबंधित सारे बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इसमें विषय संकलित किए गए हैं। यह आने वाली पीढ़ी लिए शोध का विषय बने, इसके लिए प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा यह राष्ट्र मंदिर कैसे है और प्रभु के मानव कल्याण संदेश क्या हैं, माता जानकी जी के जीवन आदर्श समेत वह कैसे महिला सशक्तीकरण के लिए ज्वलंत उदाहरण हैं, हर एक विषय की व्याख्या की गई है। वहीं कुछ प्रमुख भारतीय भाषाओं में श्रीरामकथा, अयोध्या के 148 मंदिरों की चर्चा, आने वाली युवा पीढ़ी को प्रभु श्रीराम कथावाचक कैसे बनाया जाए... कई विषयों को विस्तार से संकलित कर अयोध्या में प्रभु श्रीरामजी के मंदिर के संघर्ष की सच्ची गाथा ही नहीं, बल्कि हमारे सनातन को कैसे सबलता प्रदान किया जाए, इसे दृष्टिगत रखते हुए यह ग्रंथ तैयार करने की कोशिश की गई है

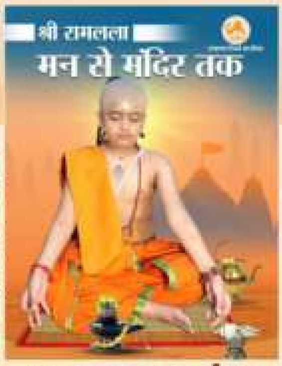

पुस्तक ग्रंथ

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

12 जून, 2025

राम मंदिर के लिए 500 वर्षों का संघर्ष स्मृतियों से ग्रंथ में उतरा

दीप्ति देवांत ● जागरण

- करीब सात साल के शोध के बाद हिंदी में तैयार हुआ 'श्री रामलला मन से मंदिर तक' ग्रंथ
- रामायण रिसर्च काउंसिल ने तैयार किया ग्रंथ, विमोचन मोदी से करवाने का होगा प्रयास

नई दिल्ली : अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर के लिए 500 वर्षों का संघर्ष अब केवल स्मृतियों में नहीं रहेगा, बल्कि एक महत्वपूर्ण ग्रंथ के माध्यम से जन-जन तक पहुंचेगा। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, 'श्री रामलला मन से मंदिर तक' नामक ग्रंथ का निर्माण किया गया है, जो करीब सात वर्षों के शोध और प्रयासों का परिणाम है।

राम मंदिर संघर्ष के सिलसिलेवार विवरण के साथ-साथ आंदोलन से जुड़े प्रमुख संतों के लेखों को भी समाहित करने वाले इस ग्रंथ को दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें 1,250 पृष्ठ हैं। इसका अंग्रेजी में अनुवाद भी चल रहा है। इसे रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा तैयार किया गया है, और इसकी विमोचन की योजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों से कराने की है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री ने इस ग्रंथ के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान किया था।

'श्री रामलला मन से मंदिर तक' ग्रंथ का आवरण ● जागरण

राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय वर्ष 2019 में आया था, जबकि इस ग्रंथ के लिए शोध कार्य 2018 से आरंभ हुआ था। इसके लिए 27 विशेषज्ञों का एक समूह काम कर रहा था, जो सांस्कृतिक और धार्मिक संघर्ष के साथ-साथ धर्मग्रंथों के जानकार भी माने जाते हैं। ग्रंथ के कलेवर को संविधान की तरह विशेष बनाने पर भी जोर दिया गया है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने बताया कि यह 500 वर्ष से अधिक पुराना सांस्कृतिक संघर्ष था, जिसे लोकतांत्रिक माध्यम से सुलझाया गया। इस संघर्ष के कई पड़ाव रहे हैं, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी संघर्ष का लंबा इतिहास शामिल है।

पद्मविभूषण पूज्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

श्री श्री 1008 परमहंस स्वामी सांदीपेंद्र जी
महाराज (माता बगलामुखी प्रांगण, नलखेड़ा, मप्र)

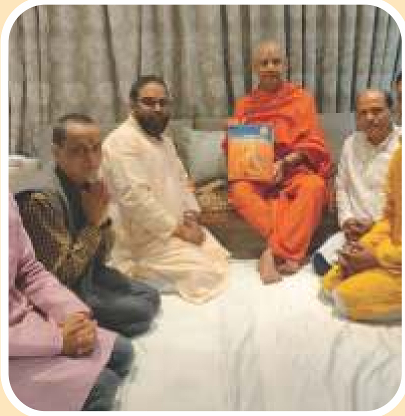

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष
परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज जी

जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर
पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज

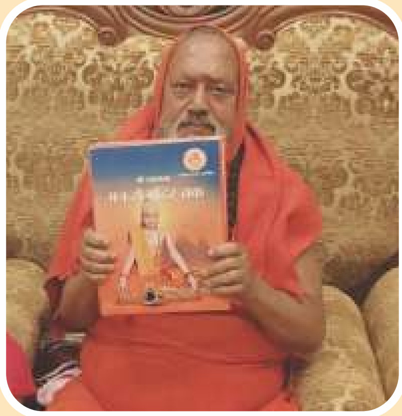

अमरकंटक में परम तपस्वी बाबा कल्याण जी
महाराज का मिला आशीर्वाद।

परमार्थ निकेतन (ऋषिकेष, उत्तराखंड) के अध्यक्ष पूज्य
स्वामी चिदानंद सरस्वती जी।

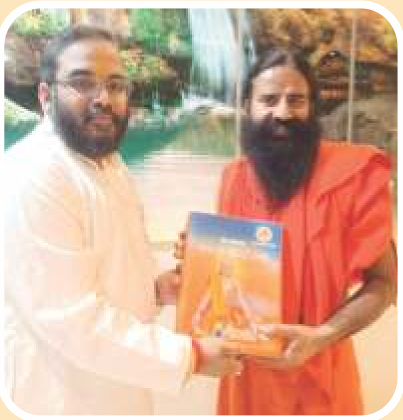

पुस्तक ग्रंथ की डमी प्रति के साथ
योग गुरु स्वामी रामदेव जी

पूज्य मोरारी बापू जी का स्नेह

गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी

श्री श्री 1008 बाबा कालिदास जी महाराज के साथ
चर्चा के लिए आश्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल।

बिहार में सिमरिया घाट पर मां काली जी
के अनन्य भक्त स्वामी चिदात्मन जी महाराज।

डॉ. आर.एन. सिंह, तत्कालीन अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

-: हमारे कार्यालय :-

Meeting Office - C/O : Sh. Ajay Bhatt Ji, 10, Teen Murti Marg, New Delhi- 110001

Ramayan Varta Central Office - C/O : Sh. Chintamani Maharaj Ji, 601, Narmada Apartment, Dr BD Marg, New Delhi-110001

NCR Team Office - C/O: Rajesh Singh, A- 2431, Bhutani Alphathum, Sector 90, Noida, UP-201305

New Delhi Team Office - C/O : Sh. Pitamber Mishra Ji, B-32, J.P. Complex, Patparganj, Mayur Vihar Phase-1, New Delhi-110091

Correspondence Office - C/O : Kumar Sushant, Shiva Apartment, Flat No. 204, F-52/53, Gali No.10, Om Vihar Extn. Uttam Nagar West, Delhi- 110059

Madhya Pradesh State Office - C/O : Mahamandleshwar Pujya Swami Sandipendra Ji Maharaj, Swami Sandipendra Ashram, Maa Baglamukhi Mandir, Nalkheda, MP-465445

Uttar Pradesh State Office - C/O : Pujya Swami Dr. Bharat Das Ji Maharaj, Sangat Rishi Udasin Ashram (Ranopali), Ayodhya, UP-224123

Bihar State Office - C/O : Sh. Sunil Kr. Pintu Ji, Block- 04, House No.- 04/07, Veerchand Patel Path, Daroga Ray Path, Near Hotel Chanakya, Patna, Bihar-800001

Sitamarhi District Office - C/O : Mahant Ramleela Das, Shree Ram Janki Math, Village : Raghopur Bakhri, Berbas Panchayat, Block : Dumra, District : Sitamarhi, Bihar : 843327

हमसे जुड़ने के लिए आप : www.ramayanresearchcouncil.com पर विजिट कर सकते हैं|

Email: ramayanresearchcouncil@gmail.com

Mobile: +91 8368320801 | +91 8800466775 | +91 8595336589 | +91 9891169934

हमारे प्रकल्प